SACH KI DASTAK, RNI : UPHIN/2017/75716
वाराणसी से प्रकाशित

वर्ष : 5, अंक : 12, मार्च 2022
मूल्य : 20 रु.

सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

यूपी + योगी = उपयोगी

"सच की दस्तक" की सफलता के 5 वर्ष

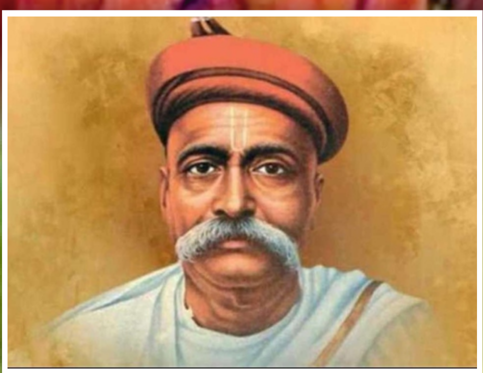

कलम इनकी जय बोल में
(बाल गंगाधर तिलक)

इंटरव्यू
डीएम सुनील कुमार वर्मा

नहीं थम रहा
रूस-यूक्रेन युद्ध

सच की दस्तक के 5 वर्ष पूर्ण होने की हार्दिक शुभकामना

डॉ शिव कुमार यादव

जिलाध्यक्ष

नेशनल इंटीग्रेटेड मेडिकल एसोसिएशन (नीमा)

जनपद चंदौली

सच की दस्तक के 5 वर्ष पूर्ण होने की हार्दिक शुभकामना

डॉ. उमाशरण पाण्डेय

बाल रोग विशेषज्ञ, डिप्टी सी.एम.ओ. आजमगढ़

जी.टी. रोड, अलीनगर,

पं. दीनदयाल उपाध्याय नगर (मुगलसराय)

चन्दौली

सचिन गुप्ता

युवा समाज सेवी

सच की दस्तक के 5 वर्ष पूर्ण होने की हार्दिक शुभकामना

श्री राम प्रकाश साहू

कल्लू मल्लू गोबरिया वाले

सच की दस्तक के 5 वर्ष पूर्ण होने की हार्दिक शुभकामना

मारूका औषधालय

वैद्य सचिन रंजन

B.Sc. (Biotech), B.A.M.S. (NAT), MD (ACU) CAHS

हर्बल, आयुर्वेदिक दवाखाना एवं ग्वासा थिरैपि

विशेषज्ञ - नसों में खिचाव, जोड़ का दर्द, गठिया, लकवा, बवासरी, सम्पूर्ण उदर रोग, गैस, साइटिका इत्यादि।

पता - नई बस्ती, महमुदपुर रोड, ट्रान्सफार्मर के पास, मुगलसराय, चन्दौली, मो0 - 7991504457, 9415175892

सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

आर.एन.आई. UPHIN/2017/75716

वर्ष : 05, अंक : 12, मार्च 2022

संरक्षक
इन्दू भूषण कोचगवे

संपादक
ब्रजेश कुमार

समाचार संपादक
आकांक्षा सक्सेना

खेल सम्पादक
मनोज उपाध्याय

उप सम्पादक
शिव मोहन सिंह

कानूनी सलाहकार
दिलीप कुमार सिंह (अधिवक्ता)

प्रूफ रीडर
बिपिन बिहारी उपाध्याय

प्रसार प्रभारी
अशोक सैनी

प्रसार सह प्रभारी
अजय राय
अशोक शर्मा
जितेन्द्र सिंह

ग्राफिक्स
संजय सिंह

सम्पादकीय कार्यालय
सी-6/2-एम, चेतगंज थाना के पास,
चेतगंज वाराणसी

पत्राचार (स्थानीय कार्यालय)
म.न. 1215ए, सुभाषनगर, मुगलसराय (चन्दौली)
मो.न. : 8299678756, 9598056904, 9450096479

पत्रिका में प्रकाशित समाचार / लेख से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र चन्दौली होगा। सभी पद अवैतनिक है।

स्वामी प्रकाशक मुद्रक ब्रजेश कुमार द्वारा यादव प्रिंटर्स, ए 14/36 भारद्वाजी टोला राजघाट वाराणसी से मुद्रित।

स्टेट ब्यूरो प्रभारी

1- मृदुला श्रीमाली - उत्तर प्रदेश
2- रोहित कोचगवे - उत्तराखण्ड
3- देवेन्द्र कुमावत - राजस्थान
4- दीपाली सोढ़ी - असम
5- प्रभाकर कुमार - बिहार
6- दीपक कुमार साहा - दिल्ली
7- श्री रामकृष्ण सहस्त्रबुद्धे - महाराष्ट्र

ब्यूरो संवाददाता / रिपोर्टर

1- डॉ निशा अग्रवाल विशेष संवाददाता जयपुर (राजस्थान)
2- विकास गौण जिला प्रभारी वाराणसी (यू.पी)
3- अक्षांशु सक्सेना जिला प्रभारी औरैया (यू.पी)
4- संजय कुमार दुबे जिला प्रभारी जौनपुर (यू.पी)
5- प्रमोद शुक्ला जिला प्रभारी बाँदा (यू.पी)
6- प्रतीक राय जिला प्रभारी गाजीपुर (यू.पी)
7- विनीत कुमार रिपोर्टर पीडीडीयू (यू.पी)
8- पवन कुमार शर्मा, जिला प्रभारी देहरादून (उत्तराखंड)

सदस्यता शुल्क

1 अंक	-	रु. 20/-
वार्षिक	-	रु. 300/-(डाकखर्च सहित)

Sach Ki Dastak
A/c. No. : 13751652000024
IFSC Code : PUNB0137510
Punjab National Bank

सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

इस बार

क्र.स.	लेख	पेज न.
1.	संपादकीय - ब्रजेश कुमार, प्रधान संपादक	03
2.	धरोहर - हरिवंश राय बच्चन	05
3.	यूपी + योगी = उपयोगी - ब्रजेश कुमार, प्रधान संपादक	06
4.	सच की दस्तक की सफलता के पांच वर्ष - ब्रजेश कुमार, प्रधान संपादक	09
5.	कलम इनकी जय बोल - कृष्णकांत श्रीवास्तव	13
6.	अंग-अंग उल्लास का उत्सव रचता फाग - शिव मोहन सिंह, उप सम्पादक देहरादून	16
7.	बलिदान दिवस पर विशेष - अलका अग्रवाल	17
8.	इंद्रधनुषी छटा, नैहर की यादें - मंजु श्रीवास्तव 'मन', अमेरिका	18
9.	खूँटाचार संहिता - डॉ. भगवत स्वरूप 'शुभम', फ़िरोज़ाबाद	19
10.	गुजरा हुआ जमाना - असीम सक्सेना 'मुक्त	22
11.	भारत का हित रूस की जीत में - सुशील उपाध्याय, देहरादून	24
12.	इंटरव्यू : डीएम सुनील कुमार वर्मा - आकांक्षा सक्सेना, न्यूज ऐडीटर	27
13.	हम हिन्दुस्तान को हिन्दुस्तान रखते हैं - मुनीश चंद्र सक्सेना, देहरादून	31
14.	लघुकथा : पेंशन - रामनाथ साहू, छत्तीसगढ़	33
15.	देखी मैंनें घृणित ठिठोली - नीता कुकरेती, देहरादून	34
16.	फगुनोत्सव, सतरंगी रंग - डॉ नीलम प्रभा वर्मा, देहरादून।	35
17.	श्रेयस अय्यर से गदगद हुए रोहित शर्मा - मनोज उपाध्याय, स्पोर्ट्स एडीटर	36
18.	बिना इंटरनेट UPI123Pay से कर सकतें हैं भुगतान! - रोहित कोचगवे,प्रभारी उत्तराखंड	38
19.	टिनिटस में लापरवाही न बरतें - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	40
20.	सच की दस्तक ने किया 'विचित्र पहल' का सम्मान - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	42
21.	होली पकवान - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	44
22.	'कश्मीर फाइल्स' ने दिखाया सच - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	46
23.	नहीं थम रहा रूस-यूक्रेन युद्ध - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	48
24.	रूस यूक्रेन संकट और गेहूं निर्यात - राकेश प्रता सिंह	51
25.	सच की दस्तक के संरक्षक का हुआ सम्मान - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	53
26.	कुँवर सर, संस्मरण व एक अध्ययन - डॉ. कृष्णा सिंह	54
27.	गौसिया - गौसिया निशात	56

संपादकीय

मेरे प्यारे पाठकों, शुभचिंतकों आप को यह बताते हुए काफी हर्ष हो रहा कि आपकी राष्ट्रीय मासिक पत्रिका , **'सच की दस्तक'** ने अपने प्रकाशन के 5 वर्ष पूरे कर लिए हैं।इसके लिए तहे दिल से आप सभी को बधाई।

5 वर्ष का सफर आप सभी के सहयोग के कारण पूरा हुआ है। इस सफर में **'सच की दस्तक'** ने बहुत उतार चढ़ाव देखे। हम सभी ने कोरोना की तीन लहरों को देखा । उस दौरान हमने केवल लोगों की तकलीफों मजबूरियों,को ही नहीं देखा बल्कि आस - पास मौत का ऐसा सन्नाटा भी देखा जो काफी भयावह था। जिसको बयान करना मुश्किल है।

उस कोरोना लहर के दौरान न जाने कितने पत्र-पत्रिकाएं बन्द भी हो गयीं लेकिन उस दौरान भी **'सच की दस्तक'** ने अपना सफ़र जारी रखा और आमजनों की परेशानियों को विश्वपटल रखा। इसके अलावा सरकार के सभी उम्दा प्रयासों को भी सबके सामने अपनी पत्रिका के माध्यम से लाया और जहां कमी दिखी उसे उजागर भी किया।

इस महामारी में वैक्सीन सबको जरूरी 2 गज की दूरी मास्क है जरूरी को खूब हमने खूब फैलाया । यहां तक कि कोरोना योद्धाओं को **सच की दस्तक** द्वारा डिजिटल सम्मान सर्टिफिकेट द्वारा सम्मानित भी करते रहे। एक प्रकार से कहा जाए तो कह सकते हैं कि सच की दस्तक टीम ने इस बात को लेकर घर - घर दस्तक दी और प्रेस/मीडिया होने का अपना धर्म निभाया। मैं कह सकता हूँ कि निश्चित ही ये कार्य आप सब के प्रयास द्वारा ही सम्भव हो सका। मुझे भली भांति याद है 7 मार्च 2017 को **'सच की दस्तक'** का प्रथम अंक आया था दिल में आपार खुशी थी जिसका इज़हार करना मुश्किल है।

दोस्तों! आज वही मार्च 2022 है अर्थात 5 वर्ष बीत गए हैं लेकिन आप का सहयोग उस समय भी था और वर्तमान में भी है।यही हमारी संपत्ति भी है और यही हमारी तसल्ली भी है।

दोस्तों! अब राजनीतिक चर्चा भी कर लेते हैं।पिछले दिनों 5 राज्यों में विधानसभा के चुनाव हुए 4 चार राज्यों में भाजपा और गठबंधन की सरकार बनी लेकिन एक राज्य में झाड़ू चली।मेरा मतलब (आप) पार्टी की बम्पर जीत हुई और भलवन्त मान को पंजाब का मुख्यमंत्री घोषित किया गया है। आने वाले समय में वे मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठकर पंजाब चलाने जा रहे हैं। जबकि देश का सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश में 35 साल बाद पुनः शासन सत्ता वापसी हुई उसे जिसका वर्तमान में शासन था।इस बदलाव में केंद्र सरकार के साथ योगी राज्य दोनों का प्रयास रहा । इसी प्रकार उत्तराखंड, गोवा, मणिपुर में पुनः उसी शासन की वापसी हुई जिसने पिछले 5 वर्ष काम किया था।लेकिन पंजाब में सारे दावे सबकी गलत साबित हुए। चन्नी सरकार जो कांग्रेस की रही वह ताश की पत्तों की ढ़ह गई ।

वहीं दिल्ली में शासन कर रही केजरीवाल की आप पार्टी पर लोगों ने विश्वास ही नहीं किया बल्कि आप पार्टी की बहुमत की सरकार वहां की जागरूक जनता ने बनवा दिया। भगवंत मान आप पार्टी के मुख्यमंत्री के चेहरा बने थे। पंजाब की जनता ने उन पर विश्वास किया और आप पार्टी की सरकार बना दी।

अब आप पार्टी का दिल्ली के बाद पंजाब में शासन आ गया है। 'आप पार्टी 'इतनी जल्दी दो राज्यों में काबिज हो गयी जो इस बात संकेत है कि 'आप पार्टी' के मुद्दे को जनता ने अब पसंद करना शुरू कर दिया है। यह पार्टी कांग्रेस का ऑप्शन बनती ही नजर आ रही है। बात यह है कि कांग्रेस को मंथन करना होगा।

'सच की दस्तक' के इस अंक में कलम इन की जय बोल में एक बार पुनः एक ऐसे वीर सपूत को लिया है जिन्होंने नारा दिया था' स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' उसी नारे ने एक ऐसी क्रांतिउस समय पैदा की थी जो देश की स्वतंत्रता आंदोलन में जान फूंक दी थी। जी हां हम बात कर रहे हैं देश के वीर सपूत 'बाल गंगाधर तिलक' जी की ।जिन्होनें ही नारा दिया था 'स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'। सबसे बड़ी बात की स्वतंत्रता आंदोलन को एक नया रूप देने के लिए महाराष्ट्र में भगवान श्री गणेश जी 'बप्पा' का पूजनोत्सव को शुरू करवाया था। इस अंक में उनके

अनछुए पहलुओं को सबके सामने रखा गया है। स्वतंत्रता आंदोलन में बाल गंगाधर तिलक ने केवल स्वतंत्रता आंदोलन के जरिए देश के युवा वर्ग को एक नई दिशा दी।

इसी अंक में हम आपको एक ऐसी शख्सियत से मिलाने जा रहे हैं जो वर्तमान में जिला- औरैया के डीएम हैं। एक प्रकार से कहा जाए तो हम कह सकते हैं कि 'सच की दस्तक' इस अंक में एक आईएएस अधिकारी का इंटरव्यू प्रकाशित कर रही है जिन्होंने कोरोना काल में बहुत ही प्रशंसनीय कार्य किए। जिसके कारण विदेशों में भी इस आईएएस अधिकारी की चर्चा हुई और वैश्विक रूप से उन्हें सम्मानित किया गया। इस इंटरव्यू में उनके कार्य करने की शैली को जानेगें, जिस समय कोरोना लोगों की जिन्दगियों को निगल रहा था। इसी अंक में मेरे द्वारा' सच की दस्तक' के 5 साल की यात्रा विषय आपके समक्ष रखा गया है जोभी 5 वर्षों का उतार-चढ़ाव रहा। आप सभी लेखक,साहित्यकारों,शुभचिंतकों का अपार सहयोग सारी चीजों का वर्णन इसमें मैंने किया है। हर छोटी-बड़ी चीजों को मैंने याद करने का प्रयास किया है जिसने सच की दस्तक की आयु को निरंतर बढ़ाने में ऑक्सीजन का काम किया हो।

मित्रों! इसी अंक में हमने रूस-यूक्रेन के युद्ध के बारे में भी दिया है। इस युद्ध से होने वाले साइड इफेक्ट के बारे में भी जानकारी दी गई है।

एक बार पुनः **'सच की दस्तक'** की पूरी संपादकीय टीम की तरफ से लेखकों, साहित्यकारों, शुभचिंतकों, पाठकों का दिल से आभार। हमारी पूरी टीम की चाहत है कि आप हमारे आने वाले सफर के साक्षी रूप साथ ही रहें, हमें सत्य पथ पर आगें बढ़ने और सच को लिखने की ताकत दें। आप सभी को रंगों के पर्व होली की ढेर् सारी बधाई व शुभकामनाएं।

ब्रजेश कुमार

हरिवंशराय बच्चन

(1907-2003)

तुम अपने रँग में रँग लो तो होली है।
देखी मैंने बहुत दिनों तक
दुनिया की रंगीनी,
किंतु रही कोरी की कोरी
मेरी चादर झीनी,
तन के तार छूए बहुतों ने
मन का तार न भीगा,
तुम अपने रँग में रँग लो तो होली है।
अंबर ने ओढ़ी है तन पर
चादर नीली-नीली,
हरित धरित्री के आँगन में
सरसों पीली-पीली,
सिंदूरी मंजरियों से है
अंबा शीश सजाए,
रोलीमय संध्या ऊषा की चोली है।
तुम अपने रँग में रँग लो तो होली है।

■■

यूपी + योगी = उपयोगी

ब्रजेश कुमार
संपादक सच की दस्तक

वर्ष 2022 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव परिणामों पर पूरे भारत की ही नहीं अपितु विदेशी नेताओं और मीडिया की भी निगाहें थीं और कई प्रकार की काली खोपड़ी लगीं हुईं थीं लेकिन उन सभी को उत्तर प्रदेश के मतदाताओं ने ध्वस्त कर दिया है। प्रदेश की जनता ने सभी राजनैतिक दलों को जबर्दस्त धूल चटा दी है और सुरक्षा, विकास स्थिरता व राष्ट्रवाद के नारे को प्राथमिकता देते हुए एक बार फिर भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए गठबंधन को प्रचंड जीत दिलायी है।

2022 के विधानसभा चुनावों में एक बार फिर वो सभी सर्वे फेल हो गये हैं जिनमें कई चुनावी तैराकी पत्रकार बंधु भाजपा को अधिक से अधिक 217 से 200 सीटों पर ही सिमटा रहे थे और एक-दो पत्रकार भाजपा को 140 से 170 सीटें भी दे रहे थे। आज वह सभी पत्रकार अपना सिर खुजला रहे हैं कि यह क्या हुआ। कुछ नेता तो ईवीएम को कोसते हुए ही दिखे और इस बार केजरीवाल ईवीएम की तरफ मुस्कुराये क्योंकि वह पंजाब जीत गये।

उत्तर प्रदेश में भाजपा के विजय रथ को रोकने के लिए सभी प्रकार के हथकंडे अपनाये गये चाहे वह किसान आंदोलन हो, हिज़ाब विवाद हो, पैंशन, बेरोजगारी, भर्ती भय हो, लखीमपुर-खीरी की हिंसा का मामला हो या फिर हाथरस की दुर्भाग्यपूर्ण घटना रही हो। प्रदेश के विधानसभा चुनावों में बीजेपी को हराने के लिए सारी ताकत झौंकी गयी पर प्रदेश के समझदार मतदाताओं ने सभी साजिशों और समीकरणों को ध्वस्त कर दिया। प्रदेश के विरोधी दलों की ओर से मिथक गढ़ा गया कि प्रदेश का ब्राह्मण समाज, पश्चिम का जाट समाज व किसान योगी सरकार से नाराज है लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। भारतीय जनता पार्टी को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के, 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' के मूल मंत्र के कारण मुस्लिम समाज को छोड़कर शेष समाज के सभी वर्गों का वोट मिला है।चुनावों के दौरान विरोधी दलों की ओर से भाजपा की छवि को धूमिल करने का हरसंभव प्रयास किया गया। चुनाव से पहले चर्चा फैलाई गयी कि ब्राह्मण वर्ग योगी सरकार से नाराज है जबकि चुनाव बाद का सर्वे बता रहा है कि भाजपा को 89 प्रतिशत ब्राह्मणों ने वोट दिया है जोकि 2017 की तुलना में छह गुणा अधिक है। यही नहीं 2017 में तत्कालीन प्रदेश सरकार की तुलना में योगी सरकार के प्रति जनता की संतुष्टि भी साठ प्रतिशत से अधिक रही।

भारतीय जनता पार्टी को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की कर्मठ और ईमानदार छवि का भी भरपूर लाभ मिला है।वो चाहते तो अपनी बहन के लिए बंगला बनवा देते पर वह बोले कि उन्होंने शपथ यूपी की गरीब जनता के लिए पक्के मकान बनवाने की ली है अपने बंगले की नहीं। वह भाजपा के असली कर्मयोद्धा बनकर उभरे हैं। प्रदेश की जनता ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सरकार की अपराधियों के प्रति जो बुलडोज़र नीतियां अपनायीं उसके लिए अपना पुरजोर समर्थन दिया। योगी सरकार में महिलाओं व कॉलेज जाने वाली युवतियों व व्यापारियों में दिन रात किसी भी समय आने-जाने की सुरक्षा भावना पैदा हुयी जिससे उन्होंने योगी के नेतृत्व में भाजपा को भरपूर वोट दिया है।

योगी के कार्यकाल में लगभग दो वर्ष कोरोना महामारी का भयंकर प्रकोप रहा। योगी का सक्षम कोरोना प्रबंधन सभी ने सराहा। कोरोना कालखंड में भाजपा सरकार ने जिस प्रकार से 15 करोड़ परिवारों को फ्री राशन उपलब्ध कराया है वह महानता रही। कठिन समय में सरकार का आम जनता के प्रति दयालु भाव उनके मन व दिमाग में पूरी तरह समा गया था जिसका परिणाम आज आया है। जब प्रदेश के विरोधी दलों को समझ में आया कि फ्री वैक्सीनेशन और राशन का असर मतदाता के दिलोदिमाग पर पड़ रहा है तब उनकी ओर से यह झूठा प्रचार किया गया कि यह फ्री का राशन केवल चुनावों तक ही मिलेगा लेकिन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की ओर से एक टीवी कार्यक्रम में ही यह ऐलान कर दिया गया था कि प्रदेश में बीजेपी सरकार की वापसी के बाद भी फ्री का राशन मिलता रहेगा। फ्री राशन के अतिरिक्त शौचालय,पक्के घर जैसी अकल्पनीय चीज़ पाने वाले विभिन्न लाभार्थी मतदाताओं ने भी बीजेपी को विजय दिलाने में कहीं कसर नहीं छोड़ी।

प्रदेश में भाजपा को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सुशासन का भी मत मिला है। केंद्र की मोदी सरकार के प्रति जनसंतोष ने भी यूपी में भाजपा की बड़ी सहायता की है। उज्ज्वला, प्रधानमंत्री आवास योजना सहित कई योजनाओं के कारण भाजपा ने अपना एक नया मतदाता वर्ग तैयार कर लिया है जिसका असर चुनाव परिणामों में देखने को मिला है। सच की दस्तक के सर्वे में 85इ प्रतिशत लोगों ने विकास को अपनी प्राथमिकता बताया। गरीब कल्याणकारी योजनाओ का असर भांप रहे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जनसभाओं से इन योजनाओं का प्रचार भी लगातार किया जिसका असर यह हुआ कि बसपा का जाटव सहित दलित वोट बैंक बड़ी मात्रा में भाजपा के पाले में चला गया और आज प्रदेश की राजनीति में बसपा हाशिये पर चली गयी है।

इन चुनाव परिणामों से एक बात यह भी साबित हो गयी है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की हिन्दुत्व छवि रैलियों व रोड शो का भरपूर असर हुआ है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहित सभी नेताओं ने अपनी जनसभाओं में विकास योजनओं के साथ-साथ सपा सरकार के कार्यकाल के दौरान अपराध, उनकी गुंडई, भ्रष्टाचार को मुद्दा बनाया और अहमदबाद कोर्ट का फैसला आने के बाद प्रधानमंत्री ने वह मुद्दा

भी खूब जोरशोर से उठाया और समाजवादी पार्टी को पूरी तरह से रेड अलर्ट कहकर बेनकाब कर डाला। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने भाजपा के नजरिये से सबसे कठिन माने जा रहे पश्चिमी उप्र की जिम्मेदारी संभाली और परिणाम आज सबके सामने है।

प्रदेश के विधानसभा चुनाव परिणामों से यह निष्कर्ष भी निकल रहा है कि अब भारतीय जनता पार्टी अपनी जनकल्याणकारी योजनाओं के बल पर समाज के सभी जाति व वर्ग की पार्टी बन चुकी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी कई जनसभाओं में स्पष्ट किया कि वह केवल गरीबों की सेवा ही करना चाहते हैं और सदा करते रहेंगे। वाराणसी को जगमगाने के बाद की अंतिम जनसभा में प्रधानमंत्री ने जिस प्रकार से गरीबी और गरीबों की सेवा करने की बात कही थी उसका असर साफ दिखायी पड़ा। प्रधानमंत्री ने रैलियों में गरीबों को भरोसा दिलाया था कि गरीब के घर में दोनों समय चूल्हा जले यह हमारी जिम्मेदारी है। उनके भाषण का ही असर रहा कि आज वाराणसी की सभी आठ सीटों पर कमल का फूल खिल रहा है। चुनावों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की छवि गरीबों के मसीहा की बनकर उभरी है और इसका लाभ भाजपा को हर राज्य में मिल रहा है। अंतिम समय में दल बदलने वाले स्वामी प्रसाद मौर्य, धर्म सिंह सैनी आदि को भारी हार का सामना करना पड़ा है। विधानसभा चुनाव परिणामों से यह निष्कर्ष भी निकल रहा है कि जो दल, नेता व विधायक पूरे पांच वर्षों तक जनमानस के बीच रहकर उनकी सेवा करते रहेंगें जनता उन्हें एक बार फिर चुन ही लेती है लेकिन जो लोग केवल चुनावी राजनीति करते हैं और केवल चुनावों के समय ही कपड़े बदलकर जनता के बीच आ जाते हैं और जनता के बीच केवल दारू और धन बांटकर, समाज व जातियों के बीच वर्ग संघर्ष पैदाकर वैमनस्य की खाई को चौड़ा कर चुनाव जीतना चाहते हैं, अब जनता उन तत्वों को सबक भी सिखा रही है।

भाजपा की जीत में एक महत्वपूर्ण बिंदु यह भी सामने आ रहा है कि अगर कुछ सीटों पर उम्मीदवारों और संगठन के बीच तालमेल ठीक से बैठा होता व कार्यकर्ताओं से संपर्क कर लिया गया होता तो इसमें कोई संदेह नहीं था कि भाजपा तीन सौ पचास का लक्ष्य भी प्राप्त कर सकती थी लेकिन इसमें चुनाव प्रचार के बीच कई कमियां रह गयी हैं। इन कमियों पर ध्यान देते हुए भाजपा 2027 में और अधिक मजबूती के साथ एक बार फिर चुनाव मैदान में बाजी मार सकती है लेकिन यह तो आने वाला समय ही बतायेगा। प्रदेश में पहली बार मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गोरखपुर से विधानसभा चुनाव लड़ा और उन्हें वहां की जनता ने भारी मतों से विजयी बनाया। उनके खिलाफ जब जय भीम, का नारा लगाते हुए चंद्रशेखर चुनाव मैदान में उतरे, दूसरी तरफ़ कन्हैया भी जहर उघलते रहे और डिंपल यादव जी ने तो योगी जी के भगवा वस्त्र की तुलना जंग से कर दी। इस चुनाव में रिकॉर्ड तोड़ बदजुबानी देखने को मिली। जो भी संघर्ष रहा हो हमारे प्रधानमंत्री जी का भी गला बैठ गया था यह रैली में सबने महसूस किया कि बीजेपी ने जबर्दस्त मेहनत से जनसमर्थन प्राप्त किया। और परिणाम स्वरूप एक बार फिर प्रदेश में योगीराज की स्थापना होने जा रही है। योगीराज-2 में पूर्ण रामराज्य की छाप दिखाई पड़ेगी और काशी, मथुरा का भी सम्मान बढ़ेगा और बेरोजगारी पर भी बुलडोज़र चलेगा तथा जो अपराधी व दंगाई बचे हुए हैं उनके खिलाफ और अधिक कड़े कदम उठाये जायेंगे तथा विकास की एक नयी परिभाषा गढ़ी जायेगी और योगी जी फिर से दमदार दस्तक देने को तैयार होगें।

■■

सच की दस्तक के सफलता के पांच वर्ष

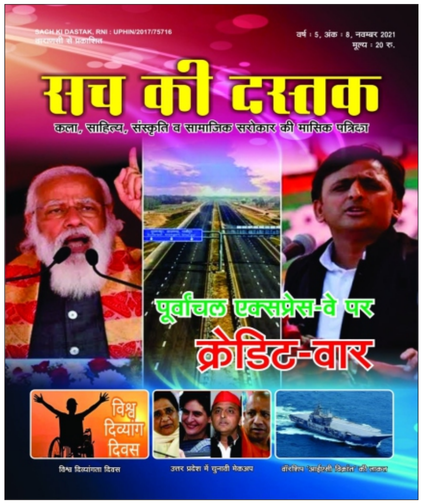

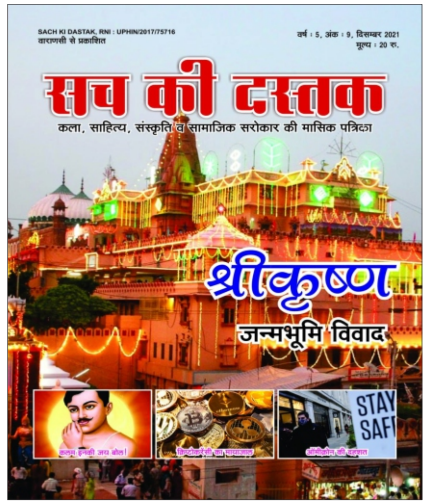

ब्रजेश कुमार
संपादक सच की दस्तक

सच की दस्तक के सभी पाठकों लेखकों, साहित्यकारों,सहयोगियों, शुभचिंतकों को सबसे पहले पत्रिका के प्रकाशन के 5 वर्ष पूर्ण किये जाने पर तहे दिल से बधाई व आभार।

प्रिय! पाठकों 5 वर्ष पहले मार्च की सातवीं तारीख को राष्ट्रीय मासिक पत्रिका 'सच की दस्तक'का लोकार्पण हुआ था और हमारा एक सपना साकार हुआ था।लेकिन मन में एक अनजाना डर जरूर था की कुछ दिन प्रकाशन होने के बाद कहीं बन्द न हो जाये। इस पत्रिका के 5 वर्ष के सफ़र में यदि सफल प्रकाशन के लिए कोई जिम्मेदार है तो वह है 'सच की दस्तक' पत्रिका की समाचार सम्पादक,'आकांक्षा सक्सेना' जी जिन्होंने इस पत्रिका को 'सच की दस्तक' नाम दिया। कुछ लोग युवा भारत और बुलंदी

नाम सजेस्ट कर रहे थे पर आकांक्षा सक्सेना ने कहा, सर! 'सच की दस्तक' नाम ही सही रहेगा। उसके बाद हम सबको भी यही नाम सटीक लगा। आगें मैं बताना चाहूँगा कि मेरे दोस्त स्पोट्‌र्स एडिटर 'मनोज उपाध्याय' जी का मुझेतन-मन-धन और पूरा मोरल सपोर्ट मिला, मेरे हर बुरे समय में मनोज उपाध्याय जी मेरी ताकत बनकर मेरे साथ रहे। तथा, हमारी कुलदेवी माता महरौड़ी देवी के आशीर्वाद से इस पत्रिका और इन दोनों सहयोगियों के साथ काम करते- करते 5 साल का सफर कैसे पूरा हो गया पता ही नही चला।इनके अलावा हमारे संजय कुमार सिंह जो प्रारम्भ से आज तक के सफर में पत्रिका ग्राफिक्स की जिम्मेदारी निभाये हुए हैं जबकि अशोक कुमार जी ने भरपूर प्रचार-प्रसार जैसे काम को लेकर अपनी जिम्मेदारी निभाई, इसे शब्दों में वर्णित करना बहुत कम आंकना सिद्ध होगा,कुल मिलाकर सभी ने अथक मेहनत से सच की दस्तक को एक राष्ट्रीय स्तर की लोकप्रिय पत्रिका साबित किया। इसके अलावा भारत की समस्त पत्रिकाओं के इतिहास में 'सच की दस्तक' वह एक मात्र पत्रिका बनी जिसने 20 दिसम्बर - 2020 के दिन इंटरनेशनल ह्यूमन सॉलीडेटरी अवार्ड (एक्सक्लूसिव हॉनर)राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मानवीय कार्य करने वाले सामाजिक कार्यकर्ताओं और लेखकों को डिजिटल पटल पर वितरित कर उनकी लोककल्याणकारी सेवाओं को सम्मानित किया।

इस 5 साल के सफर में हमने कई उतार- चढ़ाव देखे।2017 में जब ये पत्रिका प्रारम्भ हुई थी तो सभी ने कहा की पत्रिका निकालना कोई आसान काम नही है जोश में लोग निकाल तो लेते हैं लेकिन निरंतरता बनाये रखना आसान नही ।डर तो मन में था लेकिन मेरे पिता स्वर्गीय सर्वजीत जी ने मुझसे कहा, ''बेटा कभी निराश नही होना मैं हूं न।'' उनके इसी अमृतमयी वाक्य ने मुझे इतना साहस दिया कि किसी भी विपरीत परिस्थितियों में मुझे निराश व हारने नही दिया।बस मैं सभी के सहयोग से आगें बढ़ता गया फिर जस-तस मुसीबतों ने भी अपना तानाबाना बुनना शुरू कर दिया। उसी दौरान मेरे पिता को ब्रेन हेमरेज हो गया और मैं पूरी तरह टूट गया - निराश हो गया। उस समय लगा की सचमुच पत्रिका अब बन्द हो जाएगी। मैं कमरे में रो रहा था और उसी दिन मुझे मेरे शहर का जिद्दी पत्रकार अवार्ड सम्मान के लिए मंच पर बुलाया जा रहा था। मैं सोचने लगा काश! यह सम्मान एक दिन पहले मिलता तो मेरे पिताजी कितने खुश होते, कम से कम मुस्कुराते हुए दुनिया से विदा होते। पत्रकारिता के जोखिम से पिताजी को हमेशा मेरी चिंता लगी रहती थी और वह चिंता में चल बसे। फिर जब वो लोग मुझे घर पर सम्मान दे रीति निभा गये। और मैं कमरे में पिताजी के कपड़ों को पकड़ कर चुपचाप बैठा रहता था। तब मनोज उपाध्याय जी ने यह बात आकांक्षा सक्सेना को बता दी। फिर आकांक्षा ने सच की दस्तक की पूरी जिम्मेदारी उठा ली और शानदार तरह से निभाई। फिर अक्षांशु कुमार ब्यूरोचीफ औरैया ने सच की दस्तक की वेवसाईट की जिम्मेदारी ली और फिर हमने कभी पलट के नहीं देखा। फिर जितना भी बुरा समय रहा हम सब एक मुट्ठी बनकर एक रहे और सभी के सहयोग से पत्रिका का प्रकाशन अनवरत रूप से जारी रहा।फिर 2018 जुलाई में खुशखबरी आयी कि पत्रिका को आर. एन. आई. मिल गयी। और हम सब खुशी से उछल पड़े। लेकिन ये खुशखबरी जैसे आयी इस पत्रिका की जिम्मेदारी भी बढ़ गयी। एक तरफ पिता की बीमारी दूसरी तरफ पत्रिका को आगे ले जाने की जिम्मेदारी मैंने हर कठिन समय देखा पर मैं हारा नहीं रूका नही। इस दौरान मुझे हरिवंशराय बच्चन जी की कविता बहुत हिम्मत देती रही।'कोशिश करने वालों की कभी हार नही होती'मैं कोशिश करता गया और दिन प्रतिदिन आगें बढ़ता गया। जब कभी पत्रिका पर कुछ विवादित आरोप लगे तो मैंने कड़े फैसले भी लिये और तुरंत षडयंत्रकारियों को टीम से बर्खास्त कर बाहर का रास्ता दिखा दिया और पत्रिका पर कभी आंच नहीं आने दी।एक तरफ सफर बढ़ रहा था तो दूसरी तरफ मुसीबतें भी मुझे घेरती जा रही थीं।2020 में 21 जनवरी को मेरे पिता जी को समय ने मुझसे छीन लिया था और मैं पूरी टूट चुका था। पिता जी के आभाव ने मुझे अंदर तक झकझोर दिया। पिताजी के बाद मेरे बड़े भाई श्री अशोक कुमार जी ने मुझे अपने बच्चे की तरह सम्भाला और पत्रिका के प्रसार प्रभारी बन पूरी जिम्मेदारी अपने कंधों पर लिये मेरे साये की तरह मेरे साथ रहे। आज भी भैया मेरे आदर्श हैं। इसके बाद अभी मैं कुछ ही सम्भला था कि कोरोनोवायरस ने इतनी भयानक दस्तक दे दी कि पूरा भारत बंद। विज्ञापन भी बंद। पूरा मार्केट ठप्प था। हर किसी की आंख नम थी। सच कहूं तो

जिंदगी थम गई मौत पसर गयी वाला मंजर था।जिसमें रिश्ते भी तार - तार होते दिखे। पत्रकारिता के पूरे जीवनकाल में मैनें कभी ऐसा समय नही देखा था। इस दौरान देश की लगभग सारी पत्रिकाओं का प्रकाशन बन्द हो गया लेकिन सच की दस्तक का सफर इस कोरोना काल में भी बन्द नही हुआ क्योंकि हमारी टीम ने संकल्प लिया था पैसा मिले या न मिले पर सच की दस्तक का प्रकाशन रुकना नहीं चाहिये। फिर 2021 में कोविड - 2 ने पुनः दस्तक दी। जो पहले से और भी खतरनाक थी।चारों तरफ शव ही शव दिख रहे थे।वाराणसी गंगा नदी में भी शव बहते दिखे।इस कोरोना काल में देखा कि किसी के पिता बीमार हैं पर बेटा पास नही आ रहा था वह यही सोचता था कि कहीं उसे कोरोना रोग न हो जाये।पत्नी अपने सुहाग के पास आने से डर रही थी।मौत के खौफ ने रिश्तों की सच्चाई को कोरोना के माध्यम से प्रकृति ने दुनिया के सामने रख दिया। इस दौरान भी सच की दस्तक ने इस सच्चाई को भी सम्पूर्ण जनमानस के सामने पत्रिका के माध्यम से रखा। इस कोरोना काल में वर्क फ्रॉम होम होकर

जैसे एक माँ अपनी संतान की रक्षा करती है उसी तरह सच की दस्तक पत्रिका की समाचार सम्पादक आकांक्षा सक्सेना ने सच की दस्तक की देख रेख की और डिजिटल सर्टिफिकेट से भारत ही नहीं दूर देशों के कोरोना योद्धाओं को टीम दस्तक की तरफ़ से डिजिटल सर्टिफिकेट से मुहिम चलाकर सबका सम्मान बढ़ातीं रहीं और नामी-गिरामी लोगों को सच की दस्तक में जोड़ने का कार्य किया। इसी कोरोना काल में आकांक्षा सक्सेना ने इंडोनेशिया के कुटई कीराजॉन टापू के किंग डॉ. एचसी.एमएसपीए. लानस्याहरीशज़ा का ऑनलाइन इंटरव्यू लिया जिनकी जड़ें भारत के मगध राज्य से जुड़ी हैं जिनका इतिहास महाभारत काल के जरासंध से जुड़ता है जिनके पूर्वज 4वीं सदी में मगध से निकल कर इंडोनेशिया पहुंचे। का इंटरव्यू प्रकाशित करने वाली और उनका पूरा इतिहास भारतीय मीडिया 'सच की दस्तक' में प्रकाशित करने वाली प्रथम भारतीय महिला ब्लॉगर और पत्रकार बनी, जिनका नाम विश्व रिकॉर्ड में दर्ज हुआ और सोवरन किंग कुटई मूलवर्मन ने उन्हें अपने देश की रॉयल मानद उपाधि भेज कर उन्हें सम्मानित भी कर दिया। पत्रिका की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर छवि को देखते हुए आकांक्षा के अंतरराष्ट्रीय न्यूज़पेपर में प्रकाशित लेखों के कारण ईराक के प्रसिद्ध आर्टिस्ट मो. ऑबेद ने काष्ठ अग्निदहनविधि द्वारा न्यूज ऐडीटर आकांक्षा सक्सेना की मास्टरपीस कलाकृति बनाकर उन्हें टू- टाईम विश्व रिकॉर्ड होल्डर बना दिया। बस सच की दस्तक का नाम दिन दूना रात चौगुनी गति से बढ़ निकला फिर जब दिपिका पादुकोण पादुकोण की फिल्म बाजीराव मस्तानी आयी तब देश में काफी उबाल था इस बीच आकांक्षा सक्सेना की मुलाकात बाजीराव पेशवा और मस्तानी के वंशज नवाब शादाब अली बहादुर से हुई और सच की दस्तक में इस फिल्म की असल सच्चाई प्रकाशित हुई और नवाब ने सच की दस्तक को गहरा सम्मान समर्पित किया। सच की दस्तक ने हमेशा सच प्रकाशित करने का संकल्प लिया चाहे वो जैसा भी सच रहा हो। हमारी सच की दस्तक को कुछ लोग इंटरव्यू दस्तक का नाम भी देते हैं तो मुझे खुशी ही होती है। इसके बाद संविधान लेखक प्रेम बिहारी नारायण रायज़ादा जी और अम्बेडकर जी का निर्देशन पूरा ऐतिहासिक सच, सच के माध्यम से रखा गया विवाद विष भी हमने पिया और हाल ही में हमने भारत के महान प्रधानमंत्री स्व. लाल बहादुर शास्त्री जी की टीसी विषय पर जोरदार लेख प्रकाशित कर सच को सामने रखा। सच के इस सफर में मेरे सहपाठी रोहित कोचगवे का मुझे बहुत सहयोग मिला और मैं अपने देवतुल्य गुरु श्री इंदुभूषण कोचगवे जी के सम्पर्क में आया और उनका आशीर्वाद मिलता रहे उस कारण मेरी टीम ने उन्हें पत्रिका का संरक्षक बनाया।उनकी वजह से उत्तराखण्ड में हमारी मजबूत टीम बनती गयी। साथ ही पत्रिका में नामी विदेशी साहित्यकार भी जुड़ते गये। इसी सफर में मुझे अभिभावक तुल्य ख्यातिप्राप्त स्तम्भकार ,नाटककार साहित्यकार कृष्ण कांत श्रीवास्तव जी का सानिध्य मिला जिन्होंने एक समय में अभिताभ बच्चन जी के साथ नाट्यमंच साझा किया है।अब पत्रिका चल पड़ी थी ।आज इन्हीं सबके सहयोग से 'कलम इनकी जय बोल' शीर्षक से उन स्वतंत्रता आंदोलन के वीर सपूत के बारे में बता रहे है जिन्हें लोग भूलते जा रहे।सच की दस्तक के सफर में मेरा मित्र मेरा खेल सम्पादक मनोज उपाध्याय के सहयोग से 6 मार्च 2021 को पत्रिका ने अपना चौथा स्थापना दिवस जनपद चन्दौली के सैयदराजा स्थित राजकीय बालिका इंटर

कॉलेज में बनाया और 7 मार्च 2022 को सच की दस्तक के कार्यालय में टीम के साथ केक काटकर मनाया गया। क्योंकि चुनावी समय था हम बड़ा कार्यक्रम करने में असमर्थ रहे।

इस दौरान मुझे मेरी बहन जैसी शिक्षिका डॉ सुभद्रा कुमारी मिली जो ईश्वर का दिया एक नायाब तोहफा था ।डॉक्टर सुभद्रा कुमारी ने मुझे अपना भाई बना लिया। रेशम की डोर को मेरे हाथ की कलाई पर बांध दिया जो जिंदगी का अहम हिस्सा रहा ।क्योंकि मेरी कोई बहन नहीं थी आज मेरी बहन डॉक्टर सुभद्रा कुमारी भी दस्तक का अहम हिस्सा हैं ।हम दोनों अलग-अलग माता के गर्भ से जरूर पैदा लिए हैं लेकिन भाई बहन का प्यार हम दोनों का अटूट है उन्होंने भी सच की दस्तक को आगे बढ़ाने में काफी योगदान दिया है।

वर्तमान समय में सच की दस्तक की टीम बड़ी हो गई है। सच की दस्तक का कुशल संपादन हो सके इसके लिए उत्तराखंड से प्रसिद्ध साहित्यकार, गीतकार,समीक्षक श्री शिव मोहन सिंह को पत्रिका का उप संपादक बनाया गया है। साथ ही उत्तर प्रदेश राजस्थान, दिल्ली, उत्तराखंड ,असम ,बिहार, महाराष्ट्र में हमारी पत्रिका के ब्यूरो हेड हैं। उत्तर प्रदेश की स्टेट ब्यूरो हेड मृदुला श्रीमाली रोहित कोचगवे ब्यूरो हेड उत्तराखंड ,राजस्थान के ब्यूरो हेड देवेंद्र कुमावत, असम दीपाली सोढ़ी ,दीपक कुमार साह स्टेट ब्यूरो हेड दिल्ली, प्रभाकर कुमार बिहार व महाराष्ट्र के स्टेट व्यूरो प्रभारी रामकृष्ण सहस्त्रबुद्धे काम कर रहे हैं। इसके अलावा कानूनी दांवपेच को अमलीजामा दिलीप कुमार सिंह के द्वारा पहनाया जा रहा है। प्रसार की जिम्मेदारी अशोक कुमार के साथ साथ अजय राय ,अशोक शर्मा ने सम्भाल रखी है। इसके अलावा डॉक्टर निशा अग्रवाल जिला ब्यूरो हेड जयपुर राजस्थान विकास गौड़ जिला प्रभारी वाराणसी , औरैया ब्यूरोचीफ अंक्षाशु कुमार,संजय कुमार दुबे जिला प्रभारी जौनपुर ,प्रमोद कुमार शुक्ला जिला प्रभारी बांदा ,प्रतीक राय जिला प्रभारी,गाजीपुर , पवन कुमार शर्मा, जिला प्रभारी देहरादून उत्तराखंड एक टीम के रूप में काम कर रहे हैं। सच की दस्तक ने इस टीम को लेते हुए अपने 5 वर्ष का सफल, सफर पूरा किया है। इसके लिए इस सफलता के लिए यदि सबसे बड़ा कोई जिम्मेदार है तो वह हमारे पाठक लेखक साहित्यकार वह हमारे विज्ञापन दाता, शुभचिंतक रहे हैं। तहे दिल से मैं आपके इन शब्दों का धन्यवाद देता हूं जो दस्तक में प्रकाशित होते हैं और दिल में बस जाते हैं। और मैं उम्मीद करता हूं कि मेरे आगें के सफर में आप सभी मेरी मजबूत शक्ति बनकर हमारे साथ रहेंगे। इसी आशा के साथ सभी को रंगों का पर्व होली की बधाई व शुभकामनाएं।

■■

सच की दस्तक के 5 वर्ष पूर्ण होने की हार्दिक शुभकामना

डॉ निजाम

नई बस्ती चौराहा
नई बस्ती महमदपुर मार्ग
पं दीनदयाल उपाध्याय नगर, जनपद चंदौली

बाल गंगाधर तिलक

भारत के भाल पर स्वराज का सिंहनाद करने वाले लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का अजेय तिलक - 'स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'।

पिछले कई अंकों में हमने बलिदानी क्रांतिकारी और शलाका व्यक्तित्व की कीर्ति गाथा प्रस्तुत की है।

चंदौली जनपद के वरिष्ठ नागरिक, रंगकर्मी, साहित्यिक स्तंभकार कृष्णकांत श्रीवास्तव की कलम से प्रस्तुत है -

तिलक का राष्ट्रीय राग

- संपादक

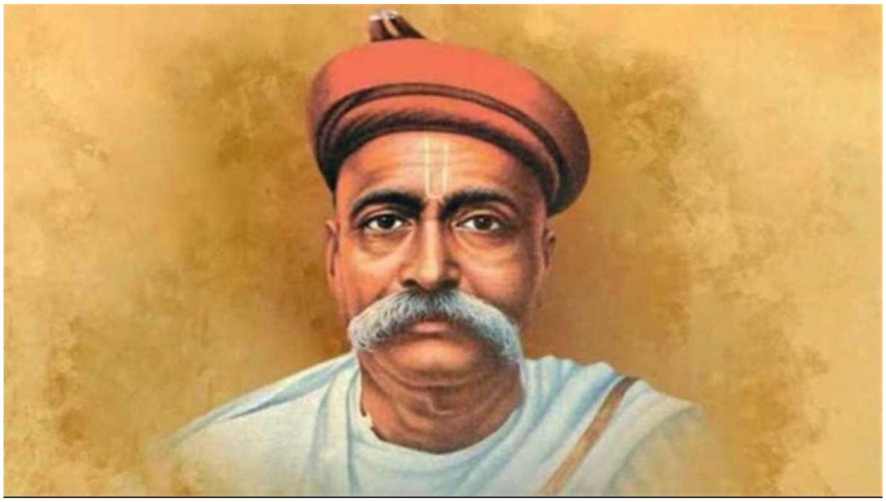

कृष्णकान्त श्रीवास्तव
वरिष्ठ रंगकर्मी - रचनाकर्मी

अजेय उद्घोष

'स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'

तिलक का स्वराज स्वराज्यम से उत्पन्न होता है, जो मूलतः 'स्व' के जागरण का मंत्र है। स्व का शासन अर्थात होमरुल।

स्वदेश - स्वराज - स्वशासन को क्रमबद्ध कर तिलक ने अपनी वैचारिकी एवं कार्मिक कार्यशैली से इसे अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में स्थापित किया।

इस वैचारिकी के अग्रणी तिलक को सन 1907 में कांग्रेस के सूरत अधिवेशन से बाहर किया गया और मांडले जेल की सजा सुनाई गई।

यह भी विचार का प्रश्न है कि राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान कितनों को फांसी दी गई, कितनो को खूंखार यातनाओं वाली जेलों जैसे कालापानी,मंडाले या लाहौर जेल भेजा गया।

महाराष्ट्र के अकोला में धूलिया कस्बे में आयोजित 'शिवाजी उत्सव' में तिलक ने अपने भाषण में स्वतंत्रता को अंतिम लक्ष्य बताया और उसकी तुलना काशी यात्रा से की।

'जैसे काशी की यात्रा, आध्यात्मिकता का अंतिम लक्ष्य है उसी तरह राजनीति का अंतिम लक्ष्य आजादी की गंगा है।' इस दुनिया ने हजारों धार्मिक ,बौद्धिक और राजनीतिक क्रांतियों को देखा है, लेकिन इन सबसे भारत अछूता बना रहा। क्या ईश्वर ने ऐसा चाहा था कि हमारा देश ऐसे ही परतंत्र बना रहे....?

जीवन वृत्त

जन्म - 23 जुलाई ,1856

स्थान - महाराष्ट्र के रत्नागिरी का चिखली नामक गांव।

पिता- रामचंद्र।

माता - पार्वतीबाई।

दादा - केशव राव , जो पेशवा राज्य

में उच्च पद पर आसीन थे ।विवाह - 1871 में जब उनकी उम्र 15 वर्ष की थी ।

पत्नी का नाम - ताराबाई।

शिक्षा - 1876 बीए की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया। स्मरण शक्ति - प्रबल।

प्रवृत्ति - निर्भीक।

स्कूल की स्थापनाङ - 1880 में पूना में 'न्यू इंग्लिश स्कूल' की स्थापना की ।

पत्रकारिता में प्रवेश

1881 में पत्रकारिता में प्रवेश किया। 'मराठा'और 'केसरी' पत्रिका का संचालन किया ।जनता के लोगों और देशी रियासतों का पक्ष प्रस्तुत करने के कारण उन्हें जेल भी जाना पड़ा। जेल से बाहर आने के बाद उन्होंने 'डेकन एजुकेशन सोसायटी' और 'फग्युरसन कालेज' की स्थापना की। सरकार ने तिलक जी की नेतृत्व वाली सोसाइटी के सभा की मान्यता को रद्द कर दिया। इन पर राजद्रोह का आरोप लगा और पचास हजार रुपये पर सजा से मुक्ति का आदेश भी दिया गया।

सामाजिक संघर्ष

तिलक ने 1888 से 1889 में शराबबंदी , नशाबंदी और भ्रष्टाचार के विरुद्ध आवाज उठाई । उन्हें 1889 में मुंबई कांग्रेस का प्रतिनिधि चुना गया । उन्होंने 1891 में सरकार द्वारा 'विवाह की उम्र का स्वीकृत विधेयक' प्रस्तुत किया ।

महाराष्ट्र में 'गणपति महोत्सव' और 'शिवाजी जयंती' को शुरू करके सार्वजनिक आयोजन के माध्यम से एकता का संदेश आम जन तक पहुंचाया । दुर्भिक्ष के समय में जनता की सहायता और सेवा करने के लिए 'लगान' और कर जैसे कानूनों का विरोध किया ।

उन्होंने 1899 में 'नरमदलवादी' नीतियों की भी आलोचना की ।तिलक जी ने 'केसरी' के माध्यम से मुजफ्फरपुर कांड में खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी की फांसी का विरोध किया ।

रूस के क्रांतिकारियों के साथ में रहकर बम बनाने और छापामार युद्ध शैली को भी सीखा। शक के आधार पर उनके घर की तलाशी के समय बम बनाने का सामान बरामद हुआ । इस आरोप की पैरवी मोहम्मद अली जिन्ना कर रहे थे । स्वयं तिलक ने भी इसकी 21 घंटे तक पैरवी की थी । लेकिन उन्हें 1908 में इस आरोप के कारण 6 साल की काला पानी की सजा दी गई और मांडले जेल के बहुत कष्टप्रद माहौल में रखा गया । दुर्भाग्यवश इसी बीच उनकी पत्नी की मृत्यु हो गई । जेल से रिहा होने पर कांग्रेस और मुस्लिम लीग का संयुक्त अधिवेशन कराया और दोनों ने 'लखनऊ पैक्ट' के द्वारा स्वराज की मांग की।

राष्ट्रीयता का विचार

तिलक जी के प्रमाणों ने दुनिया भर के पुरातत्वो को हैरान कर दिया। सन 1905 में स्वदेशी आंदोलन को पूरे महाराष्ट्र में फैला दिया था । राष्ट्रीय शिक्षा का प्रचार करने के लिए उन्होंने देवनागरी लिपि को प्रांतीय भाषाओं में प्रयोग करने पर बहुत जोर दिया। यदि हिंदू विचारधारा और भावनाओं को मिला दिया जाए तो स्वतंत्रता आंदोलन सफल होगा ऐसा उनका मानना था ।

सन 1914 में तिलक , एनी बेसेंट के साथ भारतीय राष्ट्र के स्वशासन की मांग कर रहे थे, जबकि 1918 में सुरेंद्रनाथ बनर्जी 'नेशन इन मेकिंग' की पटकथा बता रहे थे । होमरूल जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे पर तिलक और एनी बेसेंट द्वारा जिस प्रकार से निर्णय लिया गया उसे सूक्ष्म रूप से समझने की जरूरत है । एनी बेसेंट कांग्रेस के अनुमोदन के बिना ही सितंबर 1916 में 'होमरूल लीग' की स्थापना करनी पड़ी । तिलक भी इसी वैचारिकी के पक्षधर थे और उनका विश्वास था युद्ध के दौरान नरमपंथी कभी भी इस मांग को कांग्रेस में स्वीकार नहीं होने देंगे। अतः तिलक के द्वारा राष्ट्रवादियों के सम्मेलन मुंबई,बरार एवं पुणे में दिसंबर 1815 किए गए । जहाँ उन्होंने होमरूल के अर्थ को विस्तार से समझाया । उल्लेखनीय है कि यह समय प्रथम विश्व युद्ध का प्रारंभिक दौर था ।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि होमरूल के मुद्दे ने 1907 से सुषुप्ता अवस्था में पड़े राष्ट्रीय आंदोलन को नई ऊर्जा ही नहीं दी, अपितु आंदोलन की प्रकृति को ही पूर्णतया परिवर्तित कर स्वराज को स्वशासन की सीधी अवधारणा से जोड़ दिया । होमरूल के अर्थ को तिलक द्वारा बेलगांव में 1 मई 1916 को 'हिस्टोरिकल रिसर्च सोसायटी' के तत्वाधान में स्पष्ट किया गया ।उनके अनुसार जो लोग हम पर शासन कर रहे हैं वे हमसे भिन्न हैं । अतः प्रश्न यह नहीं है कि उनका शासन अच्छा है या बुरा । मूल प्रश्न यह है कि यह शासन स्व का नही है और इसकी मांग करना किसी भी प्रकार से राजद्रोह नहीं हो सकता । अतः स्वराज ही होमरूल अथवा स्वशासन है । यही तिलक राष्ट्रीयता के स्वनिर्धारिकरण के सिद्धांत को स्पष्ट करते हैं । जिसे बाद में अमेरिकी राष्ट्रपति विल्सन ने 14 सूत्री कार्यक्रम में उल्लेखित किया।

मुंबई प्रांत में एनी बेसेंट का प्रवेश वर्जित कर दिया गया और पंजाब और दिल्ली में तिलक को प्रतिबंधित कर दिया गया। 15 जून 1917 को एनी बेसेंट की गिरफ्तारी ने देश के अंदर उबाल ला दिया ,जिसका मुखर विरोध हुआ और भारत का स्वशासन का मामला अंतरराष्ट्रीय मुद्दे में परिवर्तित हो गया।

सरकारी रिकॉर्ड के अनुसार तिलक इस समय देश के सर्वमान्य नेता के रूप में प्रतिष्ठित हुए और कांग्रेस में नरमपंथीयों की पकड़ पूर्णतया समाप्त हो गई।

जनजागरण का नया अध्याय

भारत में स्वशासन का प्रश्न इस आंदोलन से जब अंतरराष्ट्रीय मुद्दे में परिवर्तित हुआ तथा अमेरिकी समाचार पत्रों में आंग्ल सरकार की भारी आलोचना हुई। प्रश्न उठा रंगभेद का ....'यदि आस्ट्रेलिया और कनाडा को सुशासन दिया जा सकता है तो भारत को क्यों नहीं।'

होमरूल अथवा 'स्व' के शासन का मंत्र लोकमान्य तिलक की लंबी राष्ट्रवादी यात्रा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पड़ाव था जिसने भारत में 'स्व' के जागरण उद्वेलित करने में निर्णायक भूमिका निभाई ।

तिलक का निधन

तिलक जी ने अपने संघर्ष और साथियों के साथ भारत माता को स्वतंत्रता दिलाने के लिए महान-महान कार्य किये।

हर जीवन का अंत तो होना ही है। अगस्त 1920 को मुंबई में निमोनिया के कारण अचानक ही उनकी मृत्यु हो गई । ध्यातव्य है कि 1947 के अगस्त माह में ही भारत आजाद हुआ।

तिलक की रचना

मांडले जेल में लिखी गई 'गीता रहस्य' सर्वोत्कृष्ट रचना है जो श्रीमद्भगवद्गीता की व्याख्या है।इसका कई भाषाओं में अनुवाद हुआ है ।

The Orion (द ओरिओन)

द आर्कटिक होम ऑफ द वेदाज

द हिंदू फिलॉसफी ऑफ लाइफ - एथिक्स एंड रिलिजन

वेदों का काल और वेदांग ज्योतिष इत्यादि।

विशेष

अगर ब्रिटिश नाटककार शेक्सपियर ने तिलक को देखा होता तो बहुत मुमकिन है कि वह उन्हें भी अपने किसी नाटक का पात्र बनाता और यथार्थ को प्रस्तुत करता।

'इंडियन अनरेस्ट' नामक किताब में चीरोल ने लिखा है कि

'अगर सच्चे अर्थों में किसी को भारतीय विद्रोह के जनक की उपाधि दी जा सकती है तो वे बाल गंगाधर तिलक ही होंगे।'

तिलक सच्चे अर्थ में लोकमान्य थे..... भारत की आधुनिक और परंपरागत ऊर्जा को चुंबकीय शक्ति से एक साथ गूथ देने वाले करिश्माई नायक ....। अभिजन - आमजन को भारत और भारतीयता के विराट अर्थों से जोड़ने वाले विचारक .....।

एक व्यक्ति और एक विचार के रूप में वे ब्रिटिश सत्ता के समक्ष भारतीय चेतना का एक प्रकाशमान प्रतीक बने रहे ।

तिलक जिस राष्ट्र का सपना देख रहे थे , वह बहुलतावादी और मिश्रित अस्मिताओं का राष्ट्र था।बिपिन चंद्र पाल तिलक के समकालीन दोस्त थे । एक राष्ट्र के रूप में भारत की पुनर्जागरण के लिए तिलक के 'स्वराज मंत्र' को पाल ने बंगाल में लागू किया ।

'जिस तिलक के लिए ईश्वर और देश में कोई अंतर न हो , जिसका यह मानना हो कि ईश्वर और मेरा देश अलग अलग नहीं है। हमारा देश ईश्वर का ही एक रूप है , उन्हें धर्म , दलगत राजनीति , विभिन्न पंथो की राजनीति का पक्षधर कहना गलत होगा ।

काला पानी की कालकोठरी में पत्नी के निधन के समय गीता रहस्य में उन्होंने रेखांकित किया - ' सिर्फ कर्म , क्रिया कर्म और कर्म की क्रिया पर ही तुम्हारा अधिकार है.....परिणाम पर नहीं.....।

अंत में

तिलक के व्यक्तित्व के ऊपर दिनकर की निम्नलिखित पंक्तियां प्रासंगिक लगती हैं - प्रियदर्शन इतिहास कंठ में आज ध्वनित हों काव्य बने वर्तमान की चित्रपटी पर

भूतकाल संभाव्य बने
जहां-जहां घन तमिर हृदय में
भर दो वहां विभा प्यारी
दुर्बल प्राणों की नस नस में
देवा फूक दो चिंगारी.....

■■

अंग-अंग उल्लास का उत्सव रचता फाग

शिव मोहन सिंह, उपसंपादक
देहरादून

1- नेह निरूपित कर गया,
मौसम का विश्वास।
अंग-अंग पुलकित किया,
वासंती उल्लास ।।

2-भाव-भाव में रंग-रस,
अंतस् में अनुराग ।
अंग-अंग उल्लास का,
उत्सव रचता फाग ।।

3- अधर-अधर के सीप में,
मोती-मोती बोल ।
नयन-नयन में शोखपन,
मन महुए का घोल ।।

4- गोरी खिलती धूप-सी,
पिया बसंती फूल ।
हवा नशीली फाग की,
हो जाती है भूल ।।

5- रसिया रीत गुलाल की,
हाव-भाव कचनार ।
पोर-पोर मद फाग में,
नयन-नयन बौछार ।।

6- साँस-साँस में फागुनी,
मद से भरी सुगंध ।
नज़र-नज़र में हो रहे,
नये-नये अनुबंध ।।

7- देह-देह रचनावली,
दबे-दबे जज्बात ।
नज़र-नज़र में बोलता,
फागुन मन की बात ।।

8- बाग-बाग मंजर सजे,
फुनगी-फुनगी फूल ।
डाल-डाल मन झूलता,
लचक-लचक पर भूल ।।

9- क्लेश द्वेष कटुता मिटे,
उत्तम रहे विचार ।
प्रेम-परस्पर फाग में,
मधुर-मधुर व्यवहार ।।

10- हँसी ठिठोली फाग की,
रास रंग मनुहार ।
हो जाते हैं गैर भी,
अपने रिश्तेदार ।।

11-डिजिटल रसिया फाग में,
नयन-नयन संवाद ।
लगती सारी दूरियाँ,
नजदीकी अनुवाद ।।

12-अल्हड़ गोरी गाँव की,
महुआ भरे उमंग ।
पिया पखावज पीटता,
फागुन ताल तरंग ।।

13-लहर-लहर मन भीगता,
नहीं आग का अंत ।
पूस पिघलता माघ बन,
लाया फाग बसंत ।।

14- अंग-अंग उपमा मिली,
अधर-अधर रस धार।
भाव-भाव मन चूमता,
फागुन रंग हजार ।।

15-मन भावन उपवन सजे
पुष्प-पुष्प मकरंद ।
साँस-साँस मलयज बसे
अंतस् में आनंद ।।

23 मार्च - बलिदान दिवस पर विशेष

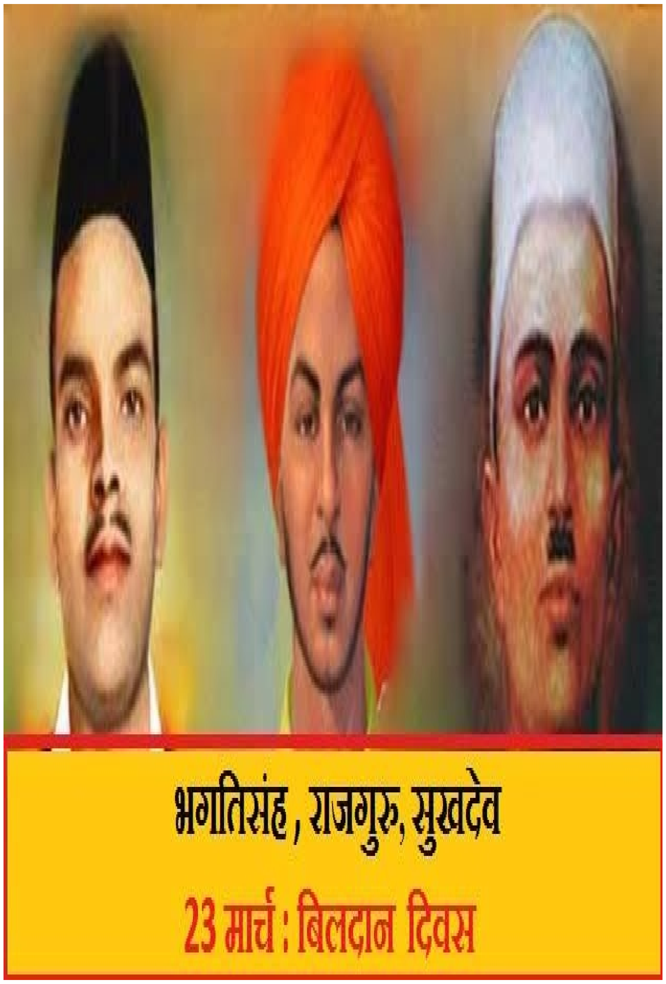

दिन वह 23 मार्च का, न भूला है, न भूला जाएगा।
देश पर जो मर मिटे, उनको देश न कभी बिसराएगा।।

भय को भयभीत करा दे, ऐसी थी तीनों की मस्ती।
वंदन शत-शत बार दीवानों, यह कैसी थी तेरी हस्ती।।

हम ना रहेंगे, भारत तो रहेगा, ये देश अजर अमर हो।
अपने रक्त की बूंद से सिंचित, इसका हर एक कण हो।।

गाते थे दिन रात दीवाने, मां रंग दे बसंती चोला।
रंग के बसंती चोला, उनने फांसी का फंदा झूला।।

फागुन का महीना था, तीनों ने होली कस के खेली।
रक्त से रंजित कर दी उनने, भारत मां की चोली।।

तीनों दीवाने कहते थे, पहले मैं फांसी पर झूलूं।
सबसे पहले जाकर, मैं भारत मां के कदमों को छू लूं।।

सुखदेव, राजगुरु, भगत सिंह, थे गजब दीवाने देश के।
खून का एक-एक कतरा उनका, आएगा काम देश के।।

हंसते-हंसते फांसी चढ़ गए, एक उफ तक न की मुंह से।
सारा आकाश गूंज गया था, इंकलाब के नारों से।।

रो उठी थी भारत मां, खोकर ऐसे वीर सपूतों को।
जिन का बलिदान दिवस मनाते हैं, हम तेईस मार्च को।।

■ ■

अलका अग्रवाल

दो कविताएँ

इंद्रधनुषी छटा

शीत ऋतु की हुई विदाई, ग्रीष्म ऋतु की आहट आई,
होली ने आकर फिर हमको, भक्त प्रह्लाद की याद दिलाई !!
अगणित रंगों से तन भीगे, मन वीणा के तार हों झंकृत,
धरा आसमां सब रंग जायें, चंदन गंध करें अलंकृत !!
भोर की किरणों का चमकीला, अरु संझा की अरुणाई ले,
भूल के अपनी उम्र का बंधन, रंग लें सब तरुणाई ले !!
पाँव करें खुद ही नर्तन और ताल पर गाये हर धड़कन,
मिट जाये सब द्वेष राग, रंग जाये तन और अंतर्मन !!
खा के गुड़िया, पी के भंग, लगा के थोड़ा थोड़ा रंग ,
बजा के ढोलक और मृदंग, मिलकर खेलें होली संग !!
बैरी थे जो वर्षों जिद में, सब में प्रीत जगे ऐसी ,
रंगों की बौछार हो ऐसे, इंद्रधनुष की छटा हो जैसे !!

नैहर की यादें

अब के बरस जब बदरी जाना तू बाबुल के देस ,
तू उनकी बिटिया की अँखियां यह देना संदेस !
माँ के ऊपर बरस भी जाना ,पोंछेगी वह आँचल से,
मुझे लगेगा जैसे आँचल मेरे तन पर लहराया ,
मेरे भीगे भीगे मन को माँ ने जैसे सहलाया !
थोड़ा सा बाबा पर गिरना, फिर वो चश्मा पोछेंगे,
पहले की ही तरह नाम वो लेकर मुझे पुकारेंगे ,
चाय पिला 'मंजु' मैं भीगा ,कह कर कपड़े झाड़ेंगे !
बरसेगी जब बहन पे मेरे, उछल- कूद वह कर लेगी ,
सड़क पे बहते पानी पर वह नाव बना कर छोड़ेगी,
भर आयेंगी उसकी आँखें,याद मुझे वह कर लेगी !
दो बहनें दो आँखें हैं हम, माँ-बाबा की गुड़िया हैं ,
प्यार की झप्पी हम देते हैं, हम जादू की पुड़िया हैं,
नैनों में आंसू लाती अब हरी हरी ये चूडियां हैं !
छूकर मेरे वतन की माटी फिर वापस आना परदेस ,
मेरे अंगना झूम के गिरना, कर देना मेरा अभिषेक ,
अंतस की सारी पीड़ा फिर बूंदो के सँग बह जायेगी,
नैहर की मीठी यादों से मेरा तन मन रँग जायेगी !

मंजु श्रीवास्तव 'मन'
वर्जीनिया, अमेरिका

खूँटाचार संहिता

डॉ. भगवत स्वरूप 'शुभम'
फ़िरोज़ाबाद

आज हम सभी 'खूँटा- युग' में साँस ले रहे हैं। प्रत्येक किसी न किसी खूँटे से बँधा हुआ है।जैसे रसायन विज्ञान में किसी पदार्थ की भौतिक रूप से पहचान करने के लिए देखकर (आँखों से) ,छूकर(त्वचा या कर स्पर्श से),सूँघकर (घ्राण से) औऱ रस अथवा स्वाद लेकर (रसना से) परीक्षा की जाती है। उसी प्रकार इन खूँटों की भौतिक परीक्षा का भी प्राविधान है।पहले इन्हें दोनों आँखों से भलीभाँति देखना पड़ता है (यदि आँख एक भी हो ,तो भी चलेगा)।इससे खूँटे का रँग,रूप,आकार आदि का पता चल जाता है। यदि आँखों /आँख से देखने पर भी पूरी जानकारी न हो ,तो इन्हें हाथ से या जिस प्रकार से भी छू सकें ; छूना पड़ता है। इससे खूँटे की कोमलता-कठोरता,चिकनाहट- खुरदरापन, शीतलता - उष्णता ,गड्ढायुक्त - गड्ढामुक्त आदि तथ्यों का ज्ञान हो जाता है।देखने

और छूने के बाद बारी आती है खूँटे को अपनी घ्राणेन्द्रिय से सूँघने की। इससे उसकी सुगंध किंवा दुर्गंध का अभिज्ञान हो जाता है । साथ ही यह भी पता चल जाता है कि उसकी उस गंध का प्रसार कहाँ तक है।यह उसके विस्तार की परीक्षा है। अब शेष रहता है ;खूँटे को चखना । रसना से स्वाद का परीक्षण हो लेता है।खूँटे की मधुरता ,कड़वाहट, तिक्तता, आदि षटरस का बोध कर लिया जाता है।

खूँटे के चतुर्विध परीक्षणोपरांत उसके चयन /बंधन की बात सामने आती है। यदि वह खूँटे से बँधने वाले पगहे से जुड़ने का निर्णय लेता है ,तो 'जुडोत्सव' का शुभ मुहूर्त, स्थान आदि का निश्चय करके जुड़ लिया जाता है। इतने विधि - विधान के उपरांत ही कोई खूँटे से बँधता है ।

इन विशिष्ट खूँटों का स्वरूप स्थूल खूँटों की तरह नहीं होता। स्थूल खूँटे एक ही स्थान पर जड़ और स्थिर होते हैं।इसके विपरीत ये विशिष्ट खूँटे चलायमान, उड़नशील औऱ गतिमान होते हैं। ये बात अलग है कि इन सबकी गति एक समान नहीं होती।अलग -अलग गति ,मति और रति से सुशोभित ये खूँटे अपने हर तौर - तरीके में भी विशिष्ट ही होते हैं।ऊँचे,लंबे ,ठिगने,मोटे, चिकने, खुरदरे , ठंडे ,गरम आदि बहु रूप और आकार प्रकार के होते हैं।खूँटों के द्वारा सौदेबाज़ी भी की जाती है और बँधने वालों को खरीदा जाता है , बेचा नहीं जाता ,क्योंकि इनसे उनके आकार - प्रकार का रूप हलका- भारी हो सकता है।कोई भी खूँटा कभी हलका या पतला नहीं होना चाहता।सर्वत्र चलायमान ये खूँटे सदैव जागरूक और जागृत अवस्था में विचरण करते हुए रहते हैं।खूँटों ने कभी रुकना और थमना नहीं सीखा।उनके गौरव औऱ गुरूर का यही सबसे बड़ा कारण है।

अब आप यह भी पूछेंगे कि ऐसा कौन है , जो किसी खूँटे से नहीं बँधा है? जहाँ तक मेरी शोध - दृष्टि जाती है , हम सभी खूँटों से बँधे हुए मदमत्त हैं। कोई खूँटों में व्यस्त है ,कोई मस्त है और कोई-कोई पस्त भी है।किसी -किसी को खूँटे ध्वस्त भी किए दे रहे हैं। पर मजबूरी है उनकी कि वे उनसे बँधकर भी आश्वस्त हैं। जाएँ तो जाएँ कहाँ। उनके लिए कहीं भी भाड़ में शीतलता नहीं हैं। कुछ पात्रों को जीवन भर खूँटा बदलने में ही बीत जाता है। यहाँ तक कि उनका सब कुछ रीत जाता है।

कोई पत्नी के खूँटे से बंधा है ,कोई पत्नी पति रूपी खूँटे के चारों ओर परिक्रमा कर रही है।कोई नौकरी या व्यवसाय के खूँटे में कोल्हू का बैल बना हुआ है।खूँटे को छोड़े तो इधर खाई उधर कुँआ है। कोई दलों के दलदल में आकंठ धंसा है।उसके लिए वहीं मजा ही मजा है।घुटन होने पर खूँटा छोड़ने को स्वतंत्र है। पुराने खूँटे को दस बीस गालियाँ सुनाकर , पचास - सौ कमियाँ गिनाकर पगहा तोड़ देता है औऱ रात को सोता है किसी छोटे से कक्ष में सवेरा किसी फाइव स्टार में होता है।गले का पगहा भी रँग बदला हुआ दूसरे रँग में नया होता है। इतना बहुत ही अच्छा कानून है कि कोई भी कभी भी पगहा तोड़ने के लिए स्वतंत्र है , लेकिन वह इतना मूर्ख भी नहीं कि असमय ही खूँटा बदल ले। पूरा -पूरा स्वाद लेने के बाद ही मति परिवर्तन करता है। इसका भी एक विशेष मौसम होता है। पाँच वर्ष में रस लोभी भौंरे की तरह वह रँग ,रस ,वेष, केश, परिवेश सब बदल लेता है। दूसरे खूँटे में पनाह ले लेता है। जिस पुराने खूँटे के गुणगान करते हुए थकता नहीं था , उसके नन्हें से छिद्रों को एक अँगुली से नहीं दोनों हाथों की दसों अंगुलियों से चौड़ा कर भाड़ बना देता है। कहता था जिनको गधा औऱ सुअर ;उन्हीं गधा - सुअरों को बाप के आसन पर सजा देता है।इस माँस की जीभ का भी क्या भरोसा ? चक्कर खा ही जाती है। इस खूँटे से निकल उधर लिपट जाती है। खूँटा वही भला , जहाँ मिले माल मलाई। इसी में तो है बँधने वाले पात्र की भलाई।जमुना गए तो जमुनादास,गंगा गए तो गंगादास। जहाँ आस ,वहीं चले साँस। मिटता है अँधेरा फैलता है प्रकाश।

खूँटों की अपनी एक विशिष्ट संस्कृति है।इस संस्कृति के बीच अपने को बनाए रखना, खट्टे - मीठे स्वाद चखना,सिर से लेकर टखना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है।जो स्ववश या परवश हम सबको शिरोधार्य है। मानने लगे हैं लोग कि आज जीने के लिए यह भी अनिवार्य है।खंभों से जुड़ने ,सटने ,चिपकने तथा उन्हें लपकने वालों की कई श्रेणियाँ हैं।चमचे,भक्त, पिछलग्गू, नेता, राजनेता औऱ उनसे भी ऊपर तंत्री आदि। सबका एक ही परिवार है। कुछ के हाथों में तो कुछ के गले में हार औऱ हाथों उपहार हैं। इससे कोई अंतर नहीं पड़ता कि सावन है ,भादों है या क्वार है ! ये सब तो अब सदाबहार है।फूलों की खुशबू औऱ इत्र की

फ़ुहार है।कभी हेलीकॉप्टर है तो कभी कार है। गली -गली ,शहर -शहर खूँटों की भरमार है।इन सभी खूँटों को अपने चहेतों/चहेतियों से अति प्यार है।खूँटा-संस्कृति का भी अपना एक खुमार है।

आइए ! हम सभी खूँटों की संख्या को घटाएँ। अपनी - अपनी महत्त्वाकांक्षा को को न छटपटाएँ ।देश का भी कभी भला सोचें।सोचें ही नहीं, करें भी। क्योंकि देश है ,तभी हम हैं। अन्यथा तैयार उधर बम हैं।ये कहने से कुछ नहीं होगा कि हम क्या किसी से कम हैं ? ईंट का उत्तर पत्थर से देना होगा। तभी हमें इस को अपना कहना होगा। इन खूँटों की क्या ?इन्हें तो जमीन चाहिए। उसे तो भक्त अपने सिर पर भी गाढ़ लेंगें। पर इस देश को बँटवारे की आग में पसार देंगे।हम सब एक हो जाएँ और एक मजबूत भारत का निर्माण कर जाएँ ,ताकि हमारी आगामी पीढ़ियाँ हमारे गुण गाएँ।

■ ■

सच की दस्तक के उपसंपादक श्री शिवमोहन सिंह का हुआ सम्मान

दिनांक 13-3-22 को उर्दू एवं हिंदी साहित्यिक मंच सुखन सरिता देहरादून द्वारा वरिष्ठ गीतकार, समीक्षक और सच की दस्तक के उपसंपादक श्री शिवमोहन सिंह, देहरादून को हिंदी साहित्य के प्रति समर्पण भाव एवं साहित्य साधना हेतु एक भव्य कार्यक्रम में सम्मानित किया गया।संस्था के अध्यक्ष जनाब तौसीर शाख ़दूनवी' तथा महामंत्री जनाब रईस अहमद 'फिगार' द्वारा आमंत्रित अतिथि एवं साहित्यकारों के साथ सम्मान-पत्र, अंग वस्त्र इत्यादि भेंट करके शिव मोहन सिंह जी को सम्मानित किया गया ।इस अवसर पर जनाब नफीसुल हसन (डायरेक्टर ओएनजीसी रिटायर्ड) डॉक्टर बी सी चौहान ,सैयद जान अहमद खान,जनाब शादाब अली जी अनूप राणा जी ,श्रीमती डॉली डबराल जी, नदीम बर्नी जी, महेंद्र प्रकाशी जी, डॉक्टर नीलम प्रभा वर्मा, श्री पवन शर्मा चंद्रकांत तोमर, मोहसिन रजा तथा शहर के अन्य कवि शायर तथा गणमान्य जन उपस्थित रहे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉक्टर बी सी चौहान तथा संचालन रईस अहमद 'फिगार' महामंत्री सुखऩ सरिता देहरादून ने किया।

■ ■

गुजरा हुआ जमाना

असीम सक्सेना 'मुक्त'

होली की कथा पौराणिक है और सभी परिचित हैं कि भक्त प्रहलाद का प्रभु पर अटूट विश्वास था और प्रभु नें अपनी लीला का अद्भुत प्रदर्शन करते हुए अपने भक्त की रक्षा की। स्पष्ट है कि प्रभु पर विश्वास करना ही मानव जीवन का आधार है । होली के त्यौहार का एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण यह भी है कि दिन भर सभी गीले कपड़ों में खुले मैदान या स्थान पर भागते दौड़ते हैं और उनका शरीर मौसम के बदलाव के अनुसार ढल जाता है। इसके बाद गर्मी आ जाती है ।

मेरी स्मृति में पहली होली के कुछ अनोखे संस्मरण हैं । मैं छोटा था, शास्त्री कालोनी के क्वार्टर पर पिताजी के मित्र और पडोसी आए गुलाल से एक दूसरे को रंगा रंग खेलने दुसरे क्वार्टर्सकी और चले गए । रंग खेलने के बाद सभी के घर नाश्ता पूरी और स्वादिष्ट सब्जी (वेज व नॉनवेज) का दौर होता था । इसके बाद सभी सायकिलों पर बैठ कर गया कालोनी की तरफ चल दिए । रास्ते में जो

भी परिचित अपरिचित मिले उनके साथ यही व्यवहार हुआ, सब एक दूसरे से गले मिलते थे और 'बुरा ना मानों होली है' के जय घोष लगाते थे।

गया कालोनी में भी यही सब हुआ फिर वहां से पूरा दल सेंट्रल कालोनी होता हुआ यूरोपियन कालोनी पहुंचा। किसी अधिकारी के लड़के नें दुसरे अधिकारी (अंकल) के चेहरे पर रंग लगा दिया तो अंकल जी नें लड़के के गाल पर एक तमाचा रसीद कर दिया कि उम्र में अपने से बड़े के चेहरे पर नहीं पैरों पर रंग लगाते हैं।

यह मेरी पहली शिक्षा थी जो संस्कृति और परंपरा के नाम पर आज भी मेरे मस्तिष्क में लाइव विडियो की तरह सेव है।

पुरुष तो कालोनियों से निकल जाते थे फिर दौर शुरू होता था कालोनी की महिलाओं की होली के हुडदंग का। यह महिलाएं क्वार्टर के नजदीक ही आपस में शरारतें, होली के स्वांग और नाटक करतीं थीं। पुरुष और स्त्री के वेश में बारात आती, विवाह की रस्मों में सीमा रहित हरकतें होतीं और खिलखिलाहट के माहौल में अगले पूरे वर्ष के लिए छेड़छाड़ की यादें स्टॉक में जमा हो जाती।

मैं एक बार किसी के साथ जल्दी कालोनी पहुँच गया और यह स्वांग लाइव देखा। कालोनी एक चाची को मैं बहुत ही सीधी और शरीफ समझता था उन्होंने तो जो हुडदंग मचा के रखा था वह तो मेरे अनुमान से कई गुना अधिक शिक्षाप्रद था। तभी किसी की नज़र मुझ पर पड़ी, शोर उठा अरे असीम आ गया। पापा और चाचा भी आ गए क्या? मैंने कहा कि मैं आ गया वो लोग इंडियन इंस्टीट्यूट कालोनी में हैं, आ रहे। इतना सुनना था की सभी महिलाएं अपने स्वरूप में वापस आ गयीं, सभा समाप्त और घर की तरफ प्रस्थान।

पहले यार्ड से शुद्ध दूध आता था जिसके खोए से गुजिया का पेट भरते थे। सभी महिलाएं साथ मिल कर गुजिया, आलू के पापड़ आदि बनाया करतीं थीं। मोहल्ले के बुजुर्ग कालोनी में रह रहे परिवारों की ग़लतफ़हमी को समाप्त करके गले मिलवाते और दोस्ती हो जाती थी। अब आजकल ऐसा नहीं होता। ना ही मनमुटाव वाले परिवारों में मित्रता कराने का दायित्व, ना तो आलू के पापड़ ना ही गुजिया ना शाम को होली मिलन का मिलना जुलना। पाश्चात्य सभ्यता के नाम पर छतों पर डीजे का शोर, बद्तमीजी का लाइव शो और नशे का सामान।

बहुत याद आता है गुजरा हुआ वह जमाना जहाँ समाज में था आदर सत्कार, मर्यादित संस्कार और सम्मान।

■■

भारत का हित रूस की जीत में

सुशील उपाध्याय
देहरादून

दुनिया में उपलब्ध सबसे श्रेष्ठ दर्शन और सबसे प्रभावपूर्ण तर्क भी युद्ध को जायज नहीं ठहरा सकते। टैगोर के शब्दों के कहें तो जब मानवता और राष्ट्र में से किसी एक के चयन की स्थिति पैदा हो तो मानवता के पक्ष में खड़े होना चाहिए। इस पैमाने पर आज भारत को यूक्रेन के साथ दिखना चाहिए, लेकिन वो यूक्रेन के साथ नहीं है। अब दर्शन से परे जाकर देखें तो साफ पता चलेगा कि रूस-यूक्रेन युद्ध में भारत ने सही निर्णय लिया है। यह निर्णय व्यावहारिक धरातल पर टिका हुआ है। और इसी निर्णय से भविष्य में भारत और भारतीयों की सुरक्षा तय होगी।

अब उन आधारों को देखिए जिनके चलते भारत को मानवता और राष्ट्र के बीच में राष्ट्र को चुनना पड़ रहा है। भारत दो तरफ से दुश्मनों से घिरा हुआ है। यदि भारत को एक साथ पाकिस्तान और चीन से निपटना पड़े तो अमेरिका पर भरोसा किया जा सकता है ? क्या अमेरिका सीधे और खुले तौर पर भारत के साथ खड़ा हो सकता है ? यूक्रेन को उदाहरण मान लें तो इस सवाल का जवाब संदेह के घेरे में है। और यह नहीं की तरफ ज्यादा झुका हुआ है। ज्यादा दूर जाने की जरूरत नहीं है, जब पिछले साल चीन ने भारत की सीमा पर 50 हजार से ज्यादा की फौज तैनात कर दी थी क्या उस वक्त संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद, महासभा और अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन ने

वैसी तेजी दिखाई थी, जैसी कि आज रूस के खिलाफ दिखती है। ये भी याद कर लीजिए कि तब भारत को पर्दे के पीछे से रूस से ही मदद मिली थी। यानि भारत के पास केवल रूस ही है जो भारत-चीन के मामलों में सकारात्मक भूमिका निभा सकता है।

अतीत पर निगाह डालकर देखिए तो पता चलेगा कि बीते 50 साल में दर्जन भर मौकों पर रूस ने वैश्विक स्तर पर भारत की लाज बचाई होगी। वस्तुतः अमेरिका की तुलना में रूस ज्यादा भरोसेमंद है और परखा हुआ दोस्त है। मौजूदा हालात में यदि भारत यूरोप और अमेरिका के खेमे में चला जाता तो निकट भविष्य में उसकी भरपाई संभव नहीं होगी। इस मामले में इस पहलू को भी देखिए कि यदि भारत रूस का साथ न दे तो रूस, चीन और पाकिस्तान का गठजोड़ बनने में कितनी देर लगेगी! ऐसे गठजोड़ का भारत के पास कोई तोड़ नहीं होगा और देश बेहद गंभीर खतरे में फंस जाएगा। जब तक रूस के साथ हमारा रिश्ता मबजूत है, तब पाकिस्तान और चीन के गठजोड़ का भी आसानी से मुकाबला किया जा सकता है।

सभी जागरूक लोगों को पता है कि भारत हथियारों के मामले में पूरी तरह रूस पर निर्भर है। आज भारत को दुनिया की चौथे-पांचवें नंबर की सैन्य ताकत माना जाता है और इस ताकत के पीछे करीब दो तिहाई हथियार और तकनीक रूस से ही मिली है। इन हथियारों और तकनीक के इस्तेमाल के लिए भी रूस की ही जरूरत पड़ेगी। मौजूदा दौर में भारत को जिस प्रकार की प्रौद्योगिकी और सैन्य सहयोग की जरूरत है, उसकी पूर्ति में रूस सक्षम है।

फ़ोर्स मैग़जीन की कार्यकारी संपादक गज़ाला वहाब ने बीबीसी हिंदी के पोर्टल पर लिखा, ''हथियारों की खरीद में रूस पर अपनी निर्भरता कम करने के लिए भारत अब फ्रांस, अमेरिका, इज़रायल, ब्रिटेन से भी हथियार खरीद रहा है. लेकिन रूस पर रक्षा क्षेत्र में हमारी दूसरी क़िस्म की निर्भरता भी है। अगर भारत में डीआरडीओ मिसाइल बनाता है तो उसमें रूस से भारत को मदद मिलती है, दूसरे देशों से नहीं। न्यूक्लियर सबमरीन में भी रूस जो मदद कर सकता है, वो अमेरिका नहीं कर सकता। रूस भारत को जिस तरह की तकनीक देता है, दूसरे देश नहीं देते। इस लिहाज से देखें तो भारत के रक्षा और सुरक्षा प्रणाली की नीतियों का आधार बिंदु रूस ही है। रूस से एस-400 मिसाइल सिस्टम का समझौता उपुर्यक्त बातों का बहुत बड़ा प्रमाण है।''

ऐसा मानना बचकाना होगा कि रूस के हाथ खींच लेने पर अमेरिका तत्काल

इसकी भरपाई कर देगा। अफगानिस्तान का उदाहरण ज्यादा पुराना नहीं है कि अमेरिका किस तरह और कितनी आसानी से निकल भागता है। अब यूक्रेन को देख लीजिए, युद्ध के आठ दिन बाद भी अमेरिकी सहायता नहीं पहुंच सकी है और इस बीच यूक्रेन बर्बाद हो चुका है। जबकि, अमेरिकी के राष्ट्रपति अपनी संसद (कांग्रेस) में व्लादिमीर जेलेंस्की की तारीफ करके ही अपने कर्तव्य की पूर्ति कर ले रहे हैं।

भारत की भौगोलिक स्थिति के लिहाज से भी देश को रूस की जरूरत है। बल्कि, एक मजबूत रूस की जरूरत है जो न केवल सैन्य स्तर पर, बल्कि आर्थिक तौर पर भी मजबूत हो। इसी मजबूती में भारत का हित है। और यही मजबूती भारत को भविष्य के खतरों से बचाएगी। वैसे, अमेरिका का इतिहास और वर्तमान, दोनों ही लाभ हासिल करने की बुनियाद पर खड़ा है। इसलिए अमेरिका के लिए भारत एक बड़ा बाजार हो सकता है, यहां की मेधा उसके लिए उपयोगी हो सकती है, लेकिन वह अच्छा दोस्त भी हो, ऐसा नहीं है। एक और तथ्य अमेरिका के खिलाफ है, जिसका इन दिनों चीनी नेताओं ने खूब इस्तेमाल किया है। वो ये है कि बीती एक सदी में दुनिया में हुए करीब 250 युद्धों में करीब 200 युद्ध सीधे तौर पर अमेरिका के कारण हुए हैं। बात साफ है, अमेरिका अपने हितों के लिए न युद्ध से परहेज करता और न ही दोस्त बदलने से। जिस पाकिस्तान ने आधी शताब्दी से अमेरिका के पांव चूमे, जब अमेरिका उसका दोस्त नहीं रह सका तो भारत का क्या रह सकेगा।

एक बार पुनः भारत के अब तक के रुख को देखें तो वो हर तरह से सही और संतुलित है। भारत ने यूक्रेन को मानवीय सहायता उपलब्ध कराई है। दोनों पक्षों से शांति स्थापित करने का अनुरोध भी किया है। यूक्रेन के विपक्ष में वैश्विक मंचों पर कोई वोट नहीं दिया है। भारत का रुख इसलिए भी सराहनीय है कि अतीत में जब भी भारत को यूक्रेन की जरूरत पड़ी है, वह हमेशा विरोधी खेमे में ही रहा है। इन बातों छोड़ भी दे ंतो इस युद्ध में रूस की जीत इसलिए भी जरूरी है ताकि तेल उत्पादन और आपूर्ति पर अमेरिका की चौधराहट स्थापित न हो। फिलहाल, यही कामना की जा सकती है कि युद्ध जल्द खत्म हो, यूक्रेन में पुनर्निर्माण के काम शुरू हों और दुनिया में संतुलन की स्थिति पैदा हो।

■■

साक्षात्कार : डीएम सुनील कुमार वर्मा, औरैया

मैं शून्य को अनंत बनाना चाहता हूँ - डीएम सुनील कुमार वर्मा

आकांक्षा सक्सेना
न्यूज ऐडीटर सच की दस्तक

विश्व का इतिहास साक्षी है कि जिसने ईमानदारी से अपनी जिम्मेदारी से दो कदम बढ़कर सुकर्म किये हैं तो इस निसर्ग ने उसे अपने ही तरह विराट और अनंत और महाकीर्तिवान बनाकर जीवंत आशीर्वाद देकर यह साबित कर दिया कि दिव्य ब्रह्मांड उसे देख रहा था। हम बात कर रहे हमारे औरैया जिले के वर्तमान जिलाधिकारी ''समाजशिरोमणि'' मान. श्री सुनील कुमार वर्मा जी की, आप सोच रहे होगें कि हमने उन्हें ''समाज-शिरोमणि'' शब्द से अलंकृत क्यों कर दिया। तो इसका जवाब आपको इसी साक्षात्कार को पूरा पढ़ने के बाद मिल ही जायेगा। गौरतलब है कि औरैया जिलाधिकारी बनने से पूर्व 'सर' वाराणसी, सोनभद्र में मुख्य विकास अधिकारी रह चुके हैं। इसके अलावा विधिक वैप विज्ञान के कंट्रोलर भी रह चुके हैं। औरैया में ज्वाइनिंग के पूर्व वह खाद्य एवं रसद आपूर्ति विभाग में विशेष सचिव के पद पर तैनात थे। वह 2013 बैच के आईएएस अधिकारी हैं। 'सर' के औरैया जिलाधिकारी पद पर आने से पूर्व उनके वे चुनिंदा महत्वपूर्ण कार्यों की समीक्षा या कहूं कि 'जबर्दस्त अभियान' जिनके कारण आज 'सर' देश - विदेश में ख्याति प्राप्त बुलंद शख्सियत हैं।

'सर' की विराट विचारधारा -

सर ने जब से याद सम्भाली तब से ही वह हर जरूरतमंद बच्चों में शिक्षा की अलख जगाते चले आ रहे हैं । उनका कहना है मैं तब तक नहीं रूकूंगा जब तक कि मेरे देश का हर बच्चा शिक्षित न बन जाये, हर बच्चा काबिल न बन जाये और मैं तो हर शून्य को अनंत(महान)

बनाना चाहता हूँ, बनते देखना चाहता हूं।

उत्कृष्ट अभियान -

28 दिसम्बर 2015 को 'सर' एटा, आगरा के (सदर एसडीएम) ज्वाइंट मजिस्ट्रेट का पदभार संभाला। जिसमें उन्होंने अपना पूरा समय और क्षमता इस क्षेत्र को दी।

तारीख 31 दिसम्बर 2015 एटा, यूपी का वह दिन जब 'सर' को पता चला कि सूबे में नकली /सिंथेटिक दूध कारखाना धड़ल्ले से चल रहा है तो सर ने स्वतः संज्ञान लेते हुए तुरंत छापा की कार्यवाही की और स्वंय मौके पर पहुंच कर पूरे 3000 लीटर से अधिक सिंथेटिक दूध मौके पर नष्ट करवाया और सभी संबंधित संपत्ति को जब्त कर लिया गया। यह प्रतिदिन 20,000 लीटर से अधिक का अवैध व्यवसाय था, जिससे छोटे बच्चों सहित लोगों के जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा।धारा 272, 273 आईपीसी, खाद्य सुरक्षा और मानक अधिनियम (2006) और आवश्यक वस्तु अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया और दो को मौके पर ही गिरफ्तार कर लिया गया था।

17 जनवरी 2015 के दिन 'सर' ने गौरखपुर में अवैध देशी शराब के खिलाफ़ एक अभियान चलाकर करीब 20 क्विंटल कच्चा माल और 50 लीटर तैयार शराब नष्ट करवा दी थी।

सन् 2015 में अवैध खनन पर 'सर' ने जबर्दस्त पहल के अनरूप उन्होंने सख्त़ी भी की और आमजनमानष को समझाया भी कि अवैध खनन न केवल पर्यावरण और पारिस्थितिकी को प्रभावित करता है बल्कि किसानों की फसलों को भी बर्बाद करता है। मवेशी गहरे और खड़ी गड्ढों में गिरकर असमय मर जाते हैं पर 'सर' की यह नैतिकतापूर्ण अभिव्यक्ति एटा के खनन माफियाओं को रास नहीं आयीं और उन्होंने उस समय एसडीएम सदर श्री सुनील कुमार वर्मा जी को 28जनवरी2016 ट्रैक्टर से कुचलने का प्रयास किया व 'सर' की टीम पर तीन बार हमला हुआ पर 'सर' की मजबूत ईरादों के सामने षडयंत्रकारियों के मंसूबे कभी पूरे न हो सके।

मई 6, सन् 2015 में आदरणीय 'सर' के समक्ष नेपाल भूकंप पीड़ितों की मदद के लिए हाईटेक राहत शिविर, गोरखपुर ने दुनिया के 17 देशों और भारत के 17 राज्यों के 12000 से अधिक पीड़ितों की सेवा की। इन्हीं मानवतावादी सुकर्मों की वजह से सर लोकप्रियता का शिखर छूते चले गए।

25 फरवरी 2016 का वह ऐतिहासिक दिन जब 'सर' ने ईंट भट्ठों पर कार्य करने वाले 6 परिवारों के 21 बंधुआ मजदूरों को रिहा कराया और उन्हें समाज की मुख्य विकास धारा से जोड़ने का भागीरथ प्रयास किया।

24 अप्रैल 2016 का वह दिन जब एटा सिटी में दुर्भाग्यपूर्ण तेजाब हमले चरम पर थे तब औचक निरीक्षण के फलस्वरूप बिना लाईसेंस तेजाब बेचने वाले मुख्य आरोपी व दुकानदार को गिरफ्तार कर लिया गया है। मुख्य आरोपी पर आईपीसी की धारा 326ए के तहत मामला दर्ज किया गया।जिससे बेटियों की जान की रक्षा हो सके।

26 अप्रैल 2016 एटा का वह दिन जब 'सर' ने पीएनडीटी एक्ट के तहत अवैध क्लीनिक व अल्ट्रासाउंड मशीन पर छापेमारी, कन्या भ्रूण व माता को बचाने का सार्थक प्रयास किया जिसमें त्वरित कार्रवाई करते हुए एक अल्ट्रासाउंड मशीन व अनाधिकृत क्लिनिक सील करवा दिया गया ।

30मई2016 का वह संघर्षरत् दिन जब 29 गौवंश मरे को जिस कारण तीन घंटे उपद्रवियों ने बवाल किया था जिस कारण फायरिंग भी हुई थी और उन गौवंश लदे टैंकर से कुछ को बचा भी लिया गया था उस खूनी संघर्ष में 'सर'अपनी जान जोखिम में डाल स्वंय पुलिस के साथ बवालियों को खदेड़ते दिखे।

2फरवरी 2021 औरैया में सर ने विशाल रोजगार मेले का सफल आयोजन करवाया वहां 11 कम्पनियां आईं जिसमें 459 लोगों का चयन किया गया जिसमें डीएम सर की भूमिका को काफी सराहा गया।

17 अगस्त 2017 का वो ऐतिहासिक दिन जब 'सर' ने जिला प्रशासन द्वारा 1018 महिला प्रधान और स्वच्छाग्रही के लिए शौचालय के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए छवी महल सिनेमा हॉल, चौकाघाट, वाराणसी में फिल्म 'टॉयलेट एक प्रेम कथा' की विशेष स्क्रीनिंग की व्यवस्था की गई थी। जिसकी सबसे बड़ी बात यह थी कि इनमें से ज्यादातर महिलाएं अपनी पूरी जिंदगी में पहली बार सिनेमा हॉल गई थीं, वो भी आदरणीय 'सर' की प्रेरणादायी पहल के कारण, और उन सबके चेहरे पर 'सर' के लिए आशीर्वादित मुस्कान थी।

28 सितम्बर 2017 वाराणसी जोन में 'सर' ने स्वच्छता सम्बन्धित जोरदार पहल की जिसमें शौचालय निर्माण की 'ट्विन पिट तकनीक' की पूरे देश में ही नहीं विश्व भर में सराहना हुई।क्योंकि यह कम लागत, पर्यावरण के अनुकूल, ग्रामीण स्तर पर निर्माण में आसान है।

इसके अलावा भी आदरणीय 'सर' ने दिव्यांग जनों, पोषण अभियान,सिर्फ़ साक्षरता नहीं बेहतरीन शिक्षा, शिक्षक सम्मान, नारी सशक्तिकरण, बेटियों की कम उम्र में ब्याह पर रोक, शिक्षा पर जोर, मतदान पर जोर, अपने अधिकारों के लिए जागरूकता कार्यक्रम, विज्ञान से जुड़ी उनकी विचित्र पहल, लोकहितकारी अनेकों अभियानों द्वारा किए गए तमाम उत्कृष्ट कार्यों के लिये अनेकों सम्मानों से नवाज़ा जा चुका और हाल ही मैं उन्हें महामहिम राष्ट्रपति जी द्वारा डिजिटल इंडियन सम्मान मिला है और लंदन द्वारा विश्व रिकॉर्ड में 'सर' का नाम दर्ज हुआ है।

आइये! जानते हैं इस साक्षात्कार में इस विधानसभा चुनाव माहौल में औरैया जिलाधिकारी की जिम्मेदारी के बारे में -

साक्षात्कार -

1-सर! निर्वाचन अधिकारी होने के नाते इस चुनाव के दौरान आपकी सबसे बड़ी जिम्मेदारी और सबसे बड़ी चुनौती क्या है?

इलेक्शन जो है सबसे बड़ी मेंन मैनेजमेंट और रिसोर्स मैनेजमेंट एक्सरसाइज़ । इसमें ह्यूमन रिसोर्स का मैनेजमेंट इंवॉल्व होता है और साथ में जो भी मैटेरियल मैनेजमेंट है जिसमें चाहे ईवीएम हो या बाकी चीजें हों, हमारे चुनाव सामग्री इत्यादि होती हैं तो उसका बहुत हैवी लेवल पर मेनेजमेंट इंवॉल्वड रहता है। इसमें सबसे बड़ी चुनौती आती है एक तो

पर्सनल मेनेजमेंट जो हमारे चुनाव कर्मी लगेंगे। उनकी ट्रेनिंग करवाना उनको ट्रेंड करते हुए उनको सा समय इलेक्शन के लिए भेजना। दूसरी जो सबसे बड़ी चुनौती रहती है इस समय पर लॉयन आर्डर को मेंटेन रखना शांति व्यवस्था कायम रहे। तीसरी बड़ी चुनौती जो हमारे सामने हैं वोटर पर्सेंटेज बढ़ाने की। क्योंकि औरैया है जो 60इ के आसपास मतदान करता रहा है। चौथी बड़ी चुनौती जो है लॉयन एनफोर्समेंट की जो हमारी एमसीसी से रिलेटेड है क्योंकि इस बार एमसीसी के अलावा जो कोरोना रिलेटेड प्रोटोकॉल है वह भी काफी स्टैंडर्ड लेवल के इंटिमेट किये गये हैं की पॉलिटिकल पार्टी है वह किस तरीके से अपना प्रचार- प्रसार करें और करोना कि नियमों का पालन करेंगे इन सब चीजों का पालन करते हुए एक निर्भय माहौल में अपना चुनाव करवाना और वोटिंग परसेंटेज बढ़ाना यह मेजर चैलेंज हमारे सामने हैं।

2- इस चुनाव में औरैया जिले का कितना वोट प्रतिशत रहने की संभावना है?

कोशिश तो हमारी जारी है । हम इसको 70 परसेंट के ऊपर ले जायें और इसी के तहत हमने स्वेत मुहिम चला रखी है जिसमें "वत्स अभियान" चल रहा है जोकि वोटर अवेयरनेस अभियान है। इसमें साईंस से रिलेटिड मेजिकल शोज होते हैं । उन शोज(कार्यक्रम) के जरिए हम प्रत्येक गांव तक पहुंचने की कोशिश कर रहे हैं और लोगों को कन्वेंश करने की कोशिश करते हैं कि ज्यादा से ज्यादा लोग वोट करने के लिये घरों से निकलें और ज्यादा से ज्यादा मात्रा में वोट पड़ें। इसमें दूसरा हमारा अभियान है 'बुलावा टोली' जो थोड़ा अलग है। बुलावा टोली के तहत हम लोगों ने गांव में सरकारी प्राथमिक विद्यालय हैं उन विद्यालयों में हमने 10-10 बच्चों की टोलियां बनवाई हैं। जो गांव में 20 तारीख को जाकर लोगों को मतदान के लिए प्रेरित करेंगीं और उनको घरों से निकाल कर मतदान के लिए स्नेहपूर्वक खींच कर लायेगें और साथ में ही महिलाओं की भी बुलावा टोली बनाई गई है जो कि स्वयं सहायता समूह की महिलाएं हैं जो कि महिलाओं के घर जायेगीं और वह महिलाओं के वोट प्रतिशत को बढ़ाने के लिए प्रेरित करेंगी। जिससे ज्यादा संख्या में वोटर आएंगे। इसके साथ ही तीसरा 'बाल अचीवर' अभियान भी शुरू किया है जिसके लिए फॉर्म दिए गए हैं। सभी परिषदीय विद्यालयों के बच्चों को करीब 50 हजार फॉर्म डिस्ट्रीब्यूट किये गए हैं। वह अपने अभिभावकों से वह फॉर्म भरवाकर प्रेरित व प्रतिबद्ध करेगें। उनसे एक तरह से शपथ लेगें कि वह मतदान करने अवश्य जाएं।

3- सर आपके जिलाधिकारी रहते हुए क्या औरैया प्लास्टिक सिटी का निर्माण और रोजगार सम्भव हो सकेगा?

जिले- औरैया में जो प्लास्टिकसिटी बनी हुई है उसका आज से करीब 10 साल पहले निर्माण हुआ था, जमीन अधिकृत हो गई थी। करीब 10- 12 साल से इस पर कुछ किसानों ने अवैध तरीके से कब्जा किया हुआ है।अब उनको वहां से निष्कासित कर दिया गया है और वह सिटी अब पूरी तरह खाली कराई जा चुकी है। अब इसमें पहली बार ऐसा हुआ है कि करीब 60-70 प्लॉट जो हमारा यूपी सीटा है, उसने व्यापारियों को दे भी दी है और इसकी शुरुआत हो चुकी है।अब व्यापारी भी आने शुरू हो गए हैं और वे जैसे - जैसे अपनी इकाइयों का निर्माण और स्थापना करते हैं फिर धीरे-धीरे यहां औद्योगिकीकरण शुरू हो जाएगा।

4-सर आजकल प्रधानमंत्री जी एक अभियान बहुत जोरों पर है, नारी सशक्तिकरण व नारी शक्ति। उस पर मेरा आपसे विनम्रतापूर्वक यह सवाल है कि व्यक्ति के पहचान के दस्तावेज आधार कार्ड में पिता जी का नाम तो दर्ज होता है पर माता जी का नाम अभी भी दर्ज नहीं है। तो क्या मैं यह समझूं कि क्या देश की नारी आज भी उपेक्षित है?

नहीं! उपेक्षा तो नहीं है लेकिन ट्रेडिशनली (परम्परागत) एक नाम होता है जो शुरू से सिर्फ़ पिता का नाम ही जोड़ते रहे हैं ये लोग।हाँ, इस तरह से अगर कोई मुहिम चलायी जाये कोई अभियान चलाया जाये कि आधारकार्ड में माता का नाम जोड़ा जाए तो यह वास्तव में एक सार्थक पहल होगी और इसको जितना बढ़ाया जाये, उतना अच्छा है क्योंकि आइडेंटिटी के तौर पर माता का नाम जैसे - पहले हाईस्कूल इंटर की मार्कशीटों में भी नहीं आता था जो अब सही कर लिया गया जो मार्कशीटों में जोड़ना शुरु हो गया है तो आधार में भी इसको जोड़ा जाना ठीक रहेगा और इसमें हम भी अपना समर्थन देते हैं और यह हमारी नारी सशक्तिकरण की दिशा में एक बेहतर पहल होगी और बेहतर कदम होगा।

5-कोरोना काल में आपके कोरोना मेनेजमेंट कार्यों को वर्ल्ड फोरम की तरफ से सम्मानित किया गया है

हम आपकी जिले से विश्व तक की इस अविस्मरणीय यात्रा के बारे में जानना चाहते हैं सर?

कोराना की जो सेकंड लहर थी।उसमें कोरोना का जो बहुत ज्यादा भय था। उस लहर के दौरान उस टाइम पर हम लोगों ने अपने कोरोना वार्ड में बेड की संख्या 70 से बढ़ाकर 200 कर ली थी। ऑक्सीजन के लिए अलग से हम लोगों ने अपना क्रायोजेनिक टैंकर जमशेदपुर भेजा था। वहां से हम लोगों ने अलग से स्पेशल व्यवस्था करा कर खुद के खर्चे पर देवकली मंदिर ट्रस्ट बनाया। देवकली मंदिर ट्रस्ट से पैसा लगाकर और कुछ व्यापारियों ने चंदा दिया। उनके पैसे व सहयोग से हम लोगों ने क्रायोजेनिक टैंकर और उस टैंकर में हम लोगों ने लिक्विड ऑक्सीजन मंगाकर स्टोर किया था। जिससे हम लोगों के पास 10 दिन का स्टॉक रहे। जहां अन्य जनपदों में बेड की कमी थी ऑक्सीजन की कमी थी पर यहां औरैया में न कभी बेड की कमी रही और ना ही ऑक्सीजन की कमी रही। अस्पताल का जो प्रबंधन था उसको भी बेहतर से बेहतर बनाने के लिए प्रयास किया गया। इसके अलावा लगातार डेली बेसिस पर हम स्वयं भी अस्पतालों के अंदर जो कोरोना वार्ड थे उसके अंदर पी. पी. ई. किट पहन कर जाते थे। हमारी सीएमओ मैडम जाती थीं और अन्य अधिकारीगण जाते थे। इसके अलावा हमने खाने पीने की व्यवस्था पर भी पूरा ध्यान दिया। क्योंकि वहां पर जो मरीजों के तीमारदार बहुत होते थे। एक टाईम पर वहां करीब 150-200 पेसेंट एडमिट थे। उनके तीमारदारों के लिए हम लोगों ने लंगर की व्यवस्था चलाई। देवकली ट्रस्ट जो हमने बनवाया उसके पैसे से जो व्यापारियों द्वारा दान दिया गया था तात्कालिक तौर पर। बस इन्हीं सब सुव्यवस्थाओं को काफी सराहा गया।

इन्हीं सब बेहतर व्यवस्थाओं के कारण हमें यानि जिले को यानि जिलाधिकारी औरैया को वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड लंदन द्वारा पुरस्कृत किया गया।

6- सर सिविल की तैयारी करने वाले जो परीक्षार्थी है जो हमारे औरैया के साथ - साथ पूरे भारतवर्ष में हैं। वो एक या दो असफलताओं के बाद निराशा से भर जाते हैं और उन परिस्थितियों में वह गलत राह चुन लेते हैं उन परीक्षार्थियों को.. आप क्या संदेश देना चाहेगें सर?

देखिए! सिविल सर्विस जो है, केवल इंटेलिजेंस का गेम नहीं है। सिविल सर्विस जो है व परिसिंटेंस का और कंसिस्टेंसी का भी गेम है और तब वो आपके पेशंस को भी नापते हैं और वो आपके रिजियलेंस को भी नापते हैं वह आपके धैर्य को नापते हैं बेसीकिली। मेरा अनुरोध सबसे यही है कि धैर्य बनाये रखें। क्योंकि मेरा भी सिविल सर्विस में तीन बार सिलेक्शन हुआ । पहले मैं एनटीपीसी में जॉब करता था। एनटीपीसी के बाद मेरा पहला सिलेक्शन हुआ मैं दमन दीव प्रशासनिक सेवा (DANIAS) में आया। दूसरा सिलेक्शन हुआ तो मैं इनकम टैक्स में आया, इण्डियन रिवेन्यू सर्विस इन इन्कमटेक्स (IRSIT) । फिर मेरा तीसरा सिलेक्शन हुआ फिर मैं आईएस होम केडर में पोस्टिंग मिली तो मेरा सब से यही है कि आप अपना धैर्य बनाए रखें अगर मैं भी धैर्य खो देता तो शायद मैं पहले अटेंम्ब के बाद दूसरे अटेम्ब छोड़ देता। सिर्फ अभी से तैयारी करना तो मैंने लगातार में चारा टाइम दिए हैं तो 4 में से 3 अंक में सिलेक्शन हुआ है तो जब भी आप बेहतर मन से प्रयास करते हैं। पूरी लगन से प्रयास करते हैं तो मेरा यह मानना है कि आपको सफलता अवश्य मिलती है और अपना धैर्य मत खोइये और अपनी निराशा में कहीं गुम न हो जायें और ज्यादा से ज्यादा बेहतर प्रयास करते रहें और तैयारी करते रहें।

7- सर! औरैया निवासी होने के नाते मैं आपसे विनम्रतापूर्वक पूछना चाहती हूँ कि औरैया में अभी तक का आपका अनुभव कैसा रहा?

औरैया बेहतर जनपद है यहां के लोग और प्रशासनिक अमला मिलकर बेहतर कार्य करता है तो उसकी सराहना भी करते हैं । उसको प्यार भी करते हैं। और मैंने भी यही कोशिश की है कि औरैया को मैं अपना सब कुछ दे सकूं। अपना मैक्सिमम टाईम और मेक्सिमम एफर्ट, औरैया के विकास में लगा सकूं। चाहे वह दिबियापुर प्लास्टिक सिटी हो। चाहे वह देवकली ट्रस्ट का निर्माण हो। देवकली ट्रस्ट के जरिए देवकली मंदिर की प्रबंधन व्यवस्था को सुधारा। औरैया का नुमाइश ग्राउंड बिल्कुल तिरस्कृत पड़ा हुआ था। हमने उसको संवारने का कार्य किया।हमने नुमाइश ट्रस्ट बनवाया। जिसके तहत प्रदर्शनी लगवायी जा सकती है और पिछली साल बेहतर प्रदर्शनी लगवायी भी गयी थी।

8-औरैया जिले की सबसे अजीब बात आपको क्या लगी?

औरैया जिले की सबसे अजीब बात मुझे यह लगी कि यहां पर एसपी और डीएम, डीएफओ (डिस्ट्रिक्ट फोरेस्ट ऑफिसर) के आवास तक नहीं बने थे। जबकि पूरे 24 साल हो गये जिले के निर्माण हुए । अब हमने डीएम आवास का निर्माण शुरू करवा दिया है जोकि लगभग आधे से ज्यादा पूर्ण हो चुका है। इसके अतिरिक्त एसपी और डीएफओ (डिस्ट्रिक्ट फॉरेस्ट ऑफीसर) आवास के लिए भी हमने जमीने अलॉट कर दीं हैं ताकि एक इंस्टीट्यूशन बेहतर तरह से विकसित हो सके। यही हमारे बेहतरीन अचीवमेंट रहेगें अगर हम इंस्टीट्यूशन को आगे बढ़ा पायें और औरैया के विकास में सहयोग दे पायें।

9- सर मैं औरैया जिले से महिला पत्रकार होने के नाते आपसे पूछना चाहती हूँ कि आपकी पत्रकारों के विषय में क्या राय है?

पत्रकार समाज और देश को आगें बढ़ाने के लिए बहुत बेहतर कार्य कर रहे हैं और एक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है पत्रकार की वो वह एक सूत्रधार के रूप में होते हैं। जो प्रशासन कार्य कर रहा है और जो समाज है और प्रशासन के बीच में जो एक कम्युनिकेशन का कार्य होता है वह पत्रकार द्वारा बेहतर तरीके से किया जाता है अगर पत्रकार अपने रोल का बेहतर तरीके से रोल अदा करते हैं तो डेमोक्रेसी का चौथा पिलर वो कहीं कमजोर न होने पाये। उस पिलर का काम है कि निष्पक्ष तरीके से रिपोर्टिंग करें और सरकार की चीजों(योजनाओं /खबरें इत्यादि) को जनता तक पहुंचाएं और जनता का फीडबैक सरकार तक पहुंचाएं। इसमें जो पत्रकार की भूमिका होती है, उसकी मैं सराहना करता हूं औरैया के भी और देश के अन्य पत्रकारों की भी।

10- कहते हैं कि एक सफल पुरूष के पीछे महिला का हाथ होताहै? आपकी फैमली और वाईफ के बारे में दो शब्द सर?

मेरे पूज्यनीय माता-पिता, बच्चों सहित पूरा परिवार मेरी ऊर्जा है और मेरी वाईफ एक बेहतरीन दोस्त, बेहतरीन माँ और एक बेहतरीन इंसान हैं। इसके अलावा मैं वसुधैव कुटुम्बकम मैं यकीन रखता हूँ।

आदरणीय पाठकों और शुभचिंतकों! सच कहूँ तो किसी भी महान विभूति की सम्पूर्ण जीवनयात्रा के प्रतिपल सदृश्य मोतियों को शब्द सूत्र में नहीं पिरोया जा सकता, यह समय को बांधने जैसा होगा। हाँ! हमने प्रयास किया है कि मान. 'सर' के सुकर्मों की सुकीर्ति इस पत्रिका के माध्यम से सम्पूर्ण देश के लगभग प्रत्येक जनमानस तक पहुंचा सकूं।

भारत सरकार से विनम्र अपील :

'सर' आपकी विशुद्ध लगन,दक्षता, सौम्यतामय सामर्थ्यता, उम्दाहुनर प्रकृति रक्षण हेतु चित्रकला रचनाधर्मिता, उच्च आदर्श नैतिक मूल्यों से ओतप्रोत और समाज व देश में बच्चों, बृद्ध, दिव्यांग जन, महिला अधिकार जागरूकता,युवा रोजगार हेतु किये गये उत्कृष्ट कार्यों के फलस्वरूप हम हमारे महान भारतवर्ष के महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी से और ग्लोबल लीडर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी से विनम्र निवेदन करती हूँ कि हमारे जिले की सूर्यसुधा, जन हृदय सम्राट,त्वरित उम्मीद, पारसमणि स्वरूप विशुद्ध चैतन्य, अहंकार रहित, उच्च आदर्श, कतिपय, शख्सियत मान. जिलाधिकारी श्री सुनील कुमार वर्मा जी को पद्मश्री,पद्मविभूषण के साथ ही देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान "भारत रत्न" प्रदान करने की कृपा करें। हम आपके आभारी रहेगें।

।। सत्यमेव जयते ।।

ग़ज़लें

1 - हम हिंदुस्तान को बस सिर्फ हिंदुस्तान रखते हैं ।

हथेली पर हम सर और अपनी जान रखते हैं।
मरमिटने का अपने मुल्क पर अरमान रखते हैं।

शहीद होकर भी जिंदा ज़हन में रहते हमेशा हम।
हम अपनी रूह में भी रूहे हिंदुस्तान रखते हैं।

हम अपने मुल्क की अलग पहचान रखते हैं।
तिरंगे के रंगों की हम अलग ही शान रखते हैं ।

नज़र में बाइबिल कुरआन गीता हैं हमारी सब ।
दिमाग़ दिल में लेकिन सिर्फ हिंदुस्तान रखते हैं।

हंसी फूलों में कलियों में अलग मुस्कान रखते हैं।
अनोखे गुलों का अजब हम गुलदान रखते हैं ।

हमारीसंस्कृति सभ्यताज सहिज है अनोखी है।
कि हम सारे जहां से अच्छा हिंदुस्तान रखते हैं।

मज़हब इंसानियतहै सोच में इन्सान रखते हैं ।
नियत सच्ची है सच्चा ही हम ईमान रखते हैं।

कि हिंदुस्तान को हम सिर्फ हिंदुस्तान रखते हैं।
हम अपने मुल्क की अलग पहचान रखते हैं।।

मुनीश चंद्र सक्सेना
देहरादून

2 - दर्द और ज़ब्त की रूदाद नहीं रख सकता ।
हुस्न से इश्क खुद फरियाद नहीं रख सकता ।

जिसमें एहसासे मुहब्बत हो कभी वह दिल ।
शाद खुद और को नाशाद नहीं रख सकता ।।

तोड़कर तौबा मैं रख लूं मयकशी का भरम,
मयकदा वीरानी से आबाद नहीं रख सकता ।।

तिशनगी चूम कर लब कह देती है कानों में,
जाम और मीना को नाशाद नहीं रख सकता।।

दिल हो बेक़ाबू तो खा़मोश हो जाता दिमाग़,
इसलिए दिल को मैं आज़ाद नहीं रख सकता ।।

ख्वाब आँखों में गर नहीं आएं तो 'मुनीश',
दिल को तू हिङ्का से आबाद नहीं रख सकता ।।

दिल को यादों से लगावट ही ना हो तो मुनीश ।
दिल फ़क़त हिङ्का से आबाद नहीं रख सकता ।।

■■

दो ग़ज़लें

रामकृष्ण सहस्त्रबुद्धे
नागपुर

1- एक कोशिश आज की

बताने दिल की बातों को नया अंदाज़ ढूंढेंगे
नए सुर ताल के खातिर बजाने साज ढूंढेंगे ।

मुखौटों में छिपाया आपने अनगिन गुनाहों को
जमीं में हैं गड़े गहरे वो सारे राज़ ढूंढेंगे ।

यकीं मानो मदद करने जमी से आसमां तक हम
किसी गहरे समंदर में नई आवाज़ ढूंढेंगे ।

कटे पर हों भले सारे मगर है हौसला जिनमें
नई जो सोच रखते हों वो हम परवाज़ ढूंढेंगे ।

सहारा बन सके अपना जो जीवन भर मुसीबत में।
दिलाए जीत हर पल जो कोई हमराज़ ढूंढेंगे ।

2. कागज़ों पर जो लिखा

कागजों पर जो लिखा है वो इबारत हो गई।
आपसी सद्भाव मिटकर फिर अदावत हो गई ।

खर्च आमद से बढ़े तो जेब खाली हो गई।
घर में वापस आ के कहते है किफायत हो गई ।

रिश्ते टूटे नाते टूटे टूटते परिवार हैं।
सो गई संवेदना तो घर इमारत हो गई ।

नफरतों की बोलियों से आज दिल छलनी हुआ।
ऐ जुबां तू बोल कैसी ये सियासत हो गई ।

कुछ कहे बिन कुछ सुने बिन कह गए या सुन गए।
किंतु सबसे खामुशी से है शिकायत हो गई ।

मंदिरों में जब भी गूंजी घंटियां आवाज दे।
रोली अक्षत फूल चढ़कर है इबादत हो गई ।

वायदे बस वायदे ही बन के देखो रह गए।
रास कहता कागजों पर है रियायत हो गई।

■■

पेंशन

चार - चार लड़के और एक लड़की के बाप शांताराम जी , स्वास्थ्य विभाग में कर्मचारी थे । वे नियुक्ति से लेकर अपने सेवानिवृत्त होने तक परिवार नियोजन - परिवार कल्याण सेक्शन में ही डटे रहे और यही सेक्शन देखते रिटायर हुए।

शांताराम डॉ. निहलानी को देखते तो देखते ही रह जाते। अपने सफेद कोट में वे बहुत ही स्मार्ट दिखते थे । उनको देखकर,शांताराम के मन में भी , ऐसे ही कोट बनवाने की इच्छा हुई थी। पर सफेद कोट तो डॉकटर भर पहनते हैं, और वे डाक्टर थे नहीं । स्वास्थ्य विभाग से थे, मगर वे दीगर कर्मचारी थे , इसलिए उन्होंने अपने स्वप्निल कोट का कलर हल्का स्लेटी कर लिया । यह सफेद के जैसा ही होगा ,और कोई दूसरा आपत्ति भी नहीं कर सकेगा । कोई आपत्ति क्यों कर... करेगा,वह हँसकर भर रह जायेगा।मगर वह, यह कटाक्ष वाली हँसी भी नहीं चाहते थे,इसलिए हल्के स्लेटी कलर को सिलेक्ट कर लिया था ,अपने मानसिक कोट के लिए।

इस साल उन्होंने कोट बनवाने का मन बना लिया था ,तभी बड़े लड़के ने अपने सिक्स्थ सेमिस्टर का फीस एडवांस मांग लिया।

चार साल बाद वे अपने स्वप्निल कोट को पहनकर दफ्तर जाना चाहते थे कि छोटे लड़के के लिए ट्रेकिंग ड्रेस ज्यादा जरूरी हो गया था।

रिटायरमेन्ट से पहले एक बार फिर उन्होंने कोशिश की थी,पर तब उस संचित कोट निधि से, लड़की के भरतनाट्यम का कॉस्ट्यूम आया था। आखिर कैरियर भी कोई चीज है ? शौक तो शौक है, उसे कभी भी पूरा किया जा सकता है।

पर उम्र की नदी कहाँ ,किसी के लिए रुकती है ! शांताराम सेवानिवृत्त हो गए।

आज पहली पेंशन मिली है । चाहे कुछ भी हो जाए । अबकी बार वह, अपना स्वप्निल कोट बनवा कर ही रहेंगे । कमाई तो परिवार के लिए होती थी । पेंशन तो उनके अपने लिए है...

अभी वे शहर के नामचीन दर्जी से अपना नाप और कपड़ा दोनों देकर ,वापस लौट रहे थे।

एक विजेता का भाव ,उनके चेहरे पर दमक रहा था।

रामनाथ साहू
छत्तीसगढ़

देखी मैंने घृणित ठिठोली

लाख मनाया मुझको जग ने
रंगों का त्यौहार है होली
नहीं मना पाई मै मन को
देखी मैने घृणित ठिठोली

मुंह में मिश्री हाथ रंग लिए
इधर-उधर सब घूम रहे हैं
आंखों की चंचलता कहती
महज स्वार्थ को ढूंढ रहे हैं
कैसे चंदा करे इक्ट्ठा
खुली हुई है इनकी झोली
नहीं मना पाई मै मन को
देखी मैंने घृणित ठिठोली

रंगों को बस आड मनाते
ये शोहदे कुछ और ही है
आते-जाते फब्बतियां करते
इनकी मंशा कुछ और ही है
हुडदंगी हुडदंग मचाते
ढूंढ रहे हैं भांग की गोली
नहीं मना पाई मै मन को
देखी मैंने घृणित ठिठोली

काले मटमैले रंगो से
पुते हुए इनके चेहरे
चेहरे पर आंख चमकती
लुटे-पिटे दिखते ये चेहरे
नकली हंसी दिखाई देती
मुंह से निकलती कडवी बोली
नहीं मना पाई मै मन को
देखी मैने घृणित ठिठोली

समरसता का भाव जगा क्या
मिल पाया क्या सच्चा स्नेह
जिसके खातिर पर्व बना
देने को जग में केवल नेह
कलुषित भाव हो यदि मन में
कैसे समझे प्रीत की बोली
नहीं मना पाई मैं मन को
देखी मैंने घृणित ठिठोली।

नीता कुकरेती
देहरादून

गीत

गीत फगुनोत्सव

रंगो पर रंग आसमान संग
कुंजों में कलियों की बजती
मृदंग।
मधुकर का नाच नाच
फूल फूल चूमकर
कमल कमल
खिलखिलकर
तृप्ति के द्वारे निर्द्वन्द
रंगों पर रंग आसमान संग।

सागर से लहर उठी
आसमान छू न सकी
छटपटाई और हुई खंड खंड
रंगों पर रंग आसमान संग।

श्वास है महका गुलाब
छेड़ दिया यमन राग
नाच उठी कुंडलिनी
फीका पड़ गया अंतर का
द्वन्द
रंगों पर रंग आसमान संग।

शक्तिपात हो ही गया
दरख्त हरित हो ही गया
अहम सारा खो ही गया
चेतन अगन हुई मंद मंद
रंगों पर रंग आसमान संग।
कुन्जो में कलियों की बजती
मृदंग।
रंगों पर रंग आसमान संग।

सतरंगी रंग

चलो सखी रंग उड़ाएँ
प्रेम के मधुर गीत गाएँ
हृदय में स्नेह दीप जलाएँ
नेह के पवित्र फूल महकाएँ
गहरा तमस है चहुंओर
संशय के गीत का शोर
आओ अपनत्व का गीत गाएँ
हृदय में स्नेह दीप जलाएँ।
ढाई आखर प्रेम का अभाव
गलियाँ गुमसुम त्रस्त समभाव
हर तरफ संदेह दहशत
सनसनी छलकपट
छंद पर ॠतुएँ थिरकती
चलो चलकर छल के छत्ते हटाएँ
प्रेम के मधुर गीत गाएँ
हृदय मे स्नेह दीप जलाएँ
इस तरह रंगोत्सव मनाएँ
चलो सखी रंग उड़ाएँ।

■■

डॉ नीलम प्रभा वर्मा
देहरादून

श्रेयस अय्यर से गदगद हुए रोहित शर्मा

मनोज उपाध्याय
खेल सम्पादक

भारत के तेजी से उभरते हुए बल्लेबाज श्रेयस अय्यर को सोमवार को फरवरी महीने के लिये आईसीसी का सर्वश्रेष्ठ पुरूष खिलाड़ी चुना गया जबकि न्यूजीलैंड की आल राउंडर अमेलिया केर ने महिलाओं में यह सम्मान हासिल किया। पिछले महीने वेस्टइंडीज और श्रीलंका के खिलाफ घरेलू श्रृंखलाओं में सफेद गेंद के शानदार प्रदर्शन की बदौलत उन्हें यह पुरस्कार मिला।

भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने सोमवार को कहा कि चेतेश्वर पुजारा और अजिंक्य रहाणे की गैर मौजूदगी में श्रीलंका के खिलाफ दो टेस्ट मैचों की श्रृंखला में श्रेयस अय्यर पर बड़ी जिम्मेदारी थी जो उसने बखूबी निभाई और अनुभव के साथ उसमें और निखार आयेगा। भारत ने दूसरा टेस्ट 238 रन से जीतकर दो मैचों की श्रृंखला 2 . 0 से अपने नाम की। रहाणे की जगह खेलने वाले अय्यर ने दूसरे टेस्ट में 92 और 67 रन बनाये। पुजारा की जगह तीसरे नंबर पर हनुमा विहारी उतरे थे। रोहित ने टीम के प्रदर्शन की तारीफ करते हुए कहा ,'' यह अच्छा प्रदर्शन रहा और मैने निजी तौर पर और एक टीम के रूप में इसका पूरा मजा लिया। हम एक टीम के रूप

व्यक्तिगत प्रदर्शन के बारे में उन्होंने कहा ,'' बतौर बल्लेबाज रविंद्र जडेजा परिपक्व हुए हैं और वह निखरते जा रहे हैं। उनसे टीम को मजबूती मिली है और गेंदबाज के तौर पर भी उनमें सुधार आया है। वह चुस्त फील्डर भी हैं यानी पूरा पैकेज हैं।'' उन्होंने कहा ,'' श्रेयस ने टी20

श्रृंखला वाला फॉर्म जारी रखा। उसे पता था कि रहाणे और पुजारा जैसे खिलाड़ियों की जगह लेने पर उसके ऊपर बड़ी जिम्मेदारी है लेकिन उसने बखूबी निभाई।'' उन्होंने कहा ,'' ऋषभ हर मैच में बेहतर कर रहा है। खासकर इन हालात में। उसके कुछ कैच और स्टम्पिंग से उसके आत्मविश्वास का पता चलता है।''

विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप में सौ विकेट लेने वाले पहले गेंदबाज बने रविचंद्रन अश्विन के बारे में उन्होंने कहा ,'' जब भी हम उसे गेंद देते हैं, वह मैच जिताने वाला प्रदर्शन करता है। अभी उसका लंबा कैरियर बचा है और हमें यकीन है कि वह ऐसा प्रदर्शन करता रहेगा। हम गुलाबी गेंद से टेस्ट खेलने की आदत डाल रहे हैं। दर्शकों की मौजूदगी से यह और खास हो गया।'' श्रीलंका के कप्तान दिमुथ करूणारत्ने ने शतक जमाया लेकिन उनकी टीम हार गई। उन्होंने कहा ,''हम मैच जीतते तो मुझें खुशी होती। मुझे पता है कि हमारी टीम अच्छी है लेकिन हम अच्छी शुरूआत को बड़ी पारियों में नहीं बदल सके। गेंदबाजी में भी हमने काफी ढीली गेंदें डाली। इसके अलावा इंग्लैंड के स्टार तेज गेंदबाज जोफ्रा आर्चर को मुंबई इंडियंस ने आठ करोड़ रूपये में खरीदा जबकि वह इस साल आईपीएल में उपलब्ध नहीं हो सकेंगे और इस खिलाड़ी का कहना है कि टीम का परिवार जैसा माहौल उन्हें सुरक्षित महसूस कराता है। दायीं कोहनी के उपचार के लिये दो बार सर्जरी करा चुके 26 साल के आर्चर चोट से उबरने के लिये इस साल इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में नहीं खेलेंगे। लेकिन वह भविष्य में फ्रेंचाइजी से जुड़ने की संभावना से काफी उत्साहित हैं।

■■

विज्ञापन शुल्क निम्न प्रकार से है

- **कलर पेज फूल पेज ₹ 20000 मात्र**
- **हाफ पेज ₹10000 मात्र**
- **ब्लैक एंड व्हाइट फूल पेज ₹12000 मात्र**
- **हाफ पेज ₹6000 मात्र**
- **रंगीन पेज पर छोटा विज्ञापन ₹2000 मात्र**
- **ब्लैक एंड व्हाइट पर छोटा विज्ञापन ₹1000 मात्र**

विज्ञापन के लिए शुल्क निम्न बैंक खाता में जमा करा सकते हैं:

Account Name: **Sach Ki Dastak**
A/c. No. : **13751652000024**
IFSC Code : **PUNB0137510**
Bank: **Panjab National Bank**

Gpay-

(1) 9045610000
(2) 9621503924

बिना इंटरनेट और स्मार्टफोन के भी UPI123Pay से कर सकतें हैं भुगतान!

रोहित कोचगवे, स्टेट ब्यूरो
उत्तराखंड

आरबीआई गवर्नर के अनुसार UPI भुगतान करने के लिए, अब आपको स्मार्टफोन या इंटरनेट कनेक्शन की आवश्यकता नहीं है। आरबीआई फीचर फोन ग्राहकों के लिए एक नया डिजिटल भुगतान तंत्र का शुभारंभ किया। आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास ने मंगलवार को एक नई सेवा का अनावरण किया जो 40 मिलियन से अधिक फीचर फोन उपयोगकर्ताओं को सुरक्षित डिजिटल भुगतान करने की अनुमति देगा। UPI (एकीकृत भुगतान इंटरफ़ेस) '123PAY' सेवा ग्राहकों के लिए सेवाओं को शुरू करने और निष्पादित करने के लिए एक तीन-चरणीय दृष्टिकोण है जो बिना इंटरनेट कनेक्शन के साधारण फोन पर काम करेगी। व्यक्ति यूपीआई के माध्यम से फीचर फोन के साथ-साथ डिजिटल भुगतान के इस नए तरीके से दूसरों को सीधे भुगतान करने में सक्षम होंगे। फिलहाल, यूपीआई भुगतान केवल इंटरनेट एक्सेस वाले स्मार्टफोन उपयोगकर्ताओं के लिए उपलब्ध है।

हाल के वर्षों में, विशेष रूप से विमुद्रीकरण के बाद, UPI भुगतान के सबसे लोकप्रिय तरीकों में से एक बन गया है। यह लेन-देन की मात्रा के मामले में देश की सबसे बड़ी खुदरा भुगतान प्रणाली है, जो व्यापक लोकप्रियता का सुझाव देती है। दास के अनुसार, यूपीआई की कई क्षमताएं वर्तमान में केवल स्मार्टफोन पर उपलब्ध हैं, जो समाज के निचले तबके के लोगों को, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, लोकप्रिय सेवा का उपयोग करने से रोकता है, इस तथ्य के बावजूद कि

स्मार्टफोन की कीमतें गिर रही हैं।आरबीआई गवर्नर के अनुसार, यूपीआई की कई क्षमताएं वर्तमान में केवल स्मार्टफोन पर उपलब्ध हैं, जो समाज के निचले तबके के लोगों को, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, लोकप्रिय सेवा का उपयोग करने से रोकता है, इस तथ्य के बावजूद कि स्मार्टफोन की कीमतें गिर रही हैं। आरबीआई गवर्नर कहा कि वित्त वर्ष 22 में अब तक यूपीआई वॉल्यूम रुपये तक पहुंच गया है। 76 लाख करोड़, वित्त वर्ष 2011 में 41 लाख करोड़ रुपये की तुलना में, और वह दिन दूर नहीं जब कुल मात्रा रुपये तक पहुंच जाएगी। 100 लाख करोड़। फीचर फोन रखने वालों की संख्या 40 करोड़ से अधिक होने की उम्मीद है। डिप्टी गवर्नर टी रबी शंकर के अनुसार, यूपीआई सेवाएं वर्तमान में यूएसएसडी-आधारित सेवाओं के माध्यम से ऐसे ग्राहकों के लिए उपलब्ध हैं, लेकिन उन्हें असुविधाजनक माना गया है, और सभी सेल ऑपरेटर ऐसी सेवाओं की अनुमति नहीं देते हैं।

फीचर फोन का उपयोग करने वाले उपयोगकर्ता अब चार प्रौद्योगिकी विकल्पों

में से एक का उपयोग करके विभिन्न प्रकार के लेनदेन करने में सक्षम होंगे। आरबीआई के अनुसार, आईवीआर (इंटरैक्टिव वॉयस रिस्पॉन्स) नंबर पर कॉल करना, फीचर फोन में ऐप की क्षमता, मिस्ड कॉल-आधारित विधि और निकटता ध्वनि-आधारित भुगतान उनमें से हैं। कंपनी के अनुसार, ग्राहक दोस्तों और परिवार को भुगतान करने, उपयोगिता बिलों का भुगतान करने, अपने वाहनों के फास्ट टैग को रिचार्ज करने, मोबाइल बिलों का भुगतान करने और खाते की शेष राशि की जांच करने में सक्षम होंगे। ग्राहक बैंक खातों को लिंक करने और यूपीआई पिन सेट या अपडेट करने में भी सक्षम होंगे।आरबीआई गवर्नर ने डिजिटल भुगतान के लिए 24 घंटे की हेल्पलाइन भी पेश की, जिसे भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (एनपीसीआई) ने भी स्थापित किया था। 'डिजीसाथी' हेल्पलाइन वेबसाइट और चैटबॉट के माध्यम से सभी कॉल करने वालों और डिजिटल भुगतान के बारे में उपयोगकर्ताओं के सवालों का जवाब देगी। 'भारत में 118 करोड़ से अधिक मोबाइल उपयोगकर्ता (ट्राई, अक्टूबर 2021) 1 का एक बड़ा मोबाइल फोन उपयोगकर्ता आधार है, जिसमें से लगभग 74 करोड़ (स्टेटिस्टा, जुलाई 2021) के पास स्मार्टफोन हैं, जो यह दर्शाता है कि देश में फीचर फोन उपयोगकर्ताओं की एक बड़ी संख्या है।' केंद्रीय बैंक के अनुसार, फीचर फोन के उपयोगकर्ताओं ने अभिनव भुगतान विकल्पों तक पहुंच को प्रतिबंधित कर दिया है। डिजिटल भुगतान और मुद्दों के बारे में प्रश्नों के लिए, उपयोगकर्ता www.digisaathi.info पर जा सकते हैं या अपने फोन से 14431 और 1800 891 3333 पर संपर्क कर सकते हैं।

टिनिटस में लापरवाही न करें

क्या आपके कानों में बगैर किसी कारण के कोई आवाज गूंजती रहती है? आप बेहद परेशान हैं तो, तो सावधान हो जाइए, क्योंकि यह कोई आम समस्या नहीं है। यह टिनिटस नामक बीमारी हो सकती है। इसे रक्तवाहिनियों की समस्या या उम्र के साथ सुनने की शक्ति क्षीण होने से जोड़कर देखा जा सकता है। टिनिटस की समस्या में कानों के अंदर बिना किसी कारण आवाज गूंजती है। लेकिन इसका उपचार भी किया जा सकता है।

लक्षण : कानों में सिसकारी, टिकटिक, सूँ,ऊं, सीटी, हल्की दहाड़ जैसी अजीब आवाजें, कानों का बजना एवं आवाज का कानों में गूंजते रहना, टिनिटस के प्रमुख लक्षणों में शामिल है। यह आवाजें समस्या की गंभीरता के अनुसार कम या ज्यादा तीव्रता लिए होती

हैं। आवाज का गूंजना एक या दोनों कानों में भी हो सकता है। इसके अलावा यह समस्या कुछ दिनों तक या लंबे समय तक रह सकती है।

टिनिटस के प्रकार :

1- ज्यादातर लोगों को जो समस्या होती है, उसमें कान के अंदरूनी, बाहरी या बीच के भाग में परेशानी होती है। सुनने की क्षमता के लिए जिम्मेदार नसों में किसी प्रकार की समस्या का होना व्यक्तिपरक टिनिटस कहलाता है।

2- वहीं टिनिटस का एक और भी प्रकार है, जो कि वस्तुपरक होता है। इसका कारण यह है, कि यह केवल डॉक्टर द्वारा तकनीकी जांच में ही सामने आता है। इस तरह के टिनिटस में खून की धमनियों में समस्या होती है। यह काफी कम लोगों में देखने को मिलता है-

1- तेज आवाजों के संपर्क में आने के कारण यह समस्या पैदा हो सकती है। किसी फैक्ट्री या साउंड उपकरणों का शोर टिनिटस कर समस्या पैदा कर सकता है।

2- कान में वैक्स इकट्ठा होना भी इसका एक कारण है। कभी कभी हमारे कानों में अतिरिक्त मात्रा में मोम जम जाता है, जो टिनिटस की समस्या को जन्म दे सकता है।

3- कान की हड्डी का बढ़ना भी इस समस्या के लिए जिम्मेदार हो सकता है, इससे सुनने की क्षमता पर विपरीत असर पड़ता है। ऐसा लगने पर डॉक्टर से जरूर संपर्क करें।

उपचार -

1- सही साधनों से कानों को साफ-सुथरा रखें। अथवा डॉक्टर से साफ करवा लें।

2- अत्यधिक शोर वाले स्थान से दूरी बनाएं रखें। यह आपकी श्रवण क्षमता को बुरी तरह से प्रभावित करता है।

3 - आप चाहें तो कानों को ढ़कने के लिए मास्क का प्रयोग कर सकते हैं, जिससे शोर शराबे तेज म्यूजिक, तेज टीवी देखने से सुरक्षित रहें।

4- कुछ ऐसे यंत्रों का प्रयोग किया जा सकता है, जो पर्यावरण संबंधी आवाजों के स्त्रोत होते हैं। इस तरह की चीजें कानों के लिए काफी फायदेमंद साबित होती हैं।

5- कई बार दवाईयों के साइड इफेट्स के रूप में टिनिटस की समस्या सामने आती है। इसलिए दवाईयों को डॉक्टरी परामर्शानुसार ही लें, लापरवाही बिल्कुल न करें। कोई भी प्रोब्लेम का अंदेशा होने पर चिकित्सक से तुरंत संपर्क करके परमर्शानुसार इलाज़ करवायें।

■■

सच की दस्तक ने किया 'एक विचित्र पहल' संस्था को सम्मानित

अद्वितीय नारी सम्मान - 2022 से सम्मानित हुई लक्ष्मी गुप्ता जी

सच की दस्तक की न्यूज़ एडीटर ब्लॉगर आकांक्षा सक्सेना और सच की दस्तक के जिला औरैया के ब्यूरोचीफ अक्षांशु कुमार ने सच की दस्तक की वार्षिक सोसलवर्कर सम्मान और विश्व महिला दिवस(8 मार्च) सम्मान मुहिम के परिप्रेक्ष्य में उत्तर प्रदेश की सुप्रसिद्ध संस्था एक विचित्र पहल समिति, औरैया की सुप्रसिद्ध क्रोनिक अकादमी जो गरीब जरूरतमंद बच्चों को निःशुल्क कम्प्यूटर की शिक्षा देने के लिए सुविख्यात है और इसी कार्यालय में स्वंय पहुंच कर ससम्मान, विचित्र पहल के संस्थापक डॉ आनंद नाथ गुप्ता जी, एडवोकेट और विचित्र पहल की तुलसी महिला शाखा की सम्मानित अध्यक्षा आदरणीय लक्ष्मी गुप्ता(विश्नोई) जी के महान उत्कृष्ट कार्यों हेतु विधिवत् सॉल उढ़ाकर अद्वितीय नारी सम्मान - 2022 से सम्मानित किया।बता दें कि विचित्र पहल संस्था का नाम विचित्र पहल इसलिए है कि यह महान कतिपय व्यक्तिव सब मिलकर करते हैं श्मशानघाट की सफाई इस लिहाज से कि स्वच्छता तो मरघट पर भी जरूरी है। जिला औरैया में पहली भगवान जगन्नाथ जी की भव्य यात्रा और तुलसी शालग्राम भगवान की भव्य यात्रा का श्रेय भी आपकी संस्था को जाता है। बता दें कि

आदरणीय लक्ष्मी गुप्ता जी ने पूरे जिले में कोरोना जैसे भयावह काल से लेकर अनेकों मौकों पर जरूरतमंद महिलाओं, बच्चों के लिए अनगिनत मानवीय कार्य किये हैं जिनको लेखनीबद्ध करना बड़ा कठिन है क्योंकि अच्छाई और सच्चाई को कलमबद्ध करना अत्यंत दुरूह है।सच की दस्तक से इंटरव्यू में विचित्र पहल संस्था ने कहा कि भारत के प्रधानमंत्री मा.नरेंद्र मोदी जी से उनकी विनम्र अपील है कि विश्व शांति की स्थापना हो,अंतर्राष्ट्रीय युद्धों पर अब विराम लगे। इसके अतिरिक्त विचित्र पहल के संस्थापक डॉ. आनंद जी ने कहा कि हमें अत्यधिक पेड़ लगाने चाहिये क्योंकि जब पेड़ नहीं होगें तो जीवन नहीं होगा और सरकारों को यह कोशिश करनी चाहिए कि हर जिले में इलेक्ट्रॉनिक शवगृह बने जिससे लकड़ी का दहन कम हो सके। इसके अलावा यमुना में गिरने वाले नालों पर भी सख्ती से प्रतिबंध लगे। गौरतलब है कि विचित्र पहल की जितनी भी मुहिम हैं वो सब सिर्फ़ जिले तक ही सीमित नहीं है। आदरणीय आनंद गुप्ता जी और आदरणीय लक्ष्मी गुप्ता जी राष्ट्रीय स्तर पर भी ख्याति प्राप्त सामाजिक कार्यकर्ता हैं। जिसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इस सामाजिक स्वंयसेवी संस्था की तारीफ़ स्वयं जिले औरैया के लोकप्रिय समाजशिरोमणि डीएम मान. सुनील कुमार वर्मा जी भी कई बार कर चुके हैं तदुपरांत विचित्र पहल संस्था के संस्थापक सहित पूरी टीम को औरैया रत्न से अलंकृत /सम्मानित कर चुके हैं।कार्यक्रम के बाद विचित्र पहल टीम ने अतिथि परम्परा के अनुरूप सच की दस्तक की टीम यानि न्यूज ऐडीटर आकांक्षा सक्सेना और ब्यूरोचीफ अक्षांशु कुमार को भी अविस्मरणीय स्मृति चिन्ह द्वारा सम्मानित किया।कार्यक्रम में प्रमुख रूप से सभासद छैया त्रिपाठी, मनीष पुरवार (हीरु), राकेश गुप्ता (बैंक वाले), रानू पोरवाल, सौरभ पोरवाल, जूनियर शाखा अनमोल के सक्रिय सदस्य अजय पोरवाल, भाजपा नेता दीपक सोनी, आनन्द गुप्ता (डाबर), कपिल गुप्ता(क्रोनिक अकादमी), सभासद पंकज मिश्रा, आदित्य पोरवाल, बैंक से सेवानिवृत्त अधिकारी शेखर गुप्ता, तेज बहादुर वर्मा, आदित्य लक्षकार, मयूर लक्षकार,समेत पूरा महिला मंडल में मीरा गुप्ता, दामिनी गुप्ता, शाखा की प्रभारी बबिता गुप्ता, कोषाध्यक्ष क्षमा सोनी, कुमकुम वर्मा, ममता बिश्नोई, रिंकी शुक्ला, प्रीती पोरवाल, प्रतिमा सविता, ज्योति विश्नोई, उषा सोनी, अनीता पोरवाल, लक्ष्मी वर्मा, रंजना गुप्ता, प्रिया गहोई, सुनीता गहोई, निशा सेंगर, एकता गुप्ता, ममता गहोई, बबिता गुप्ता आदि सम्मानित महिला सदस्य मौजूद रहीं और सभी ने सच की दस्तक सम्मान मुहिम की तारीफ़ की व आशीर्वाद दिया।

■■

स्वामी विवेकानंद के अनमोल विचार

किसी की निंदा न करें। अगर आप मदद के लिए हाथ बढ़ा सकते हैं, तो जरूर बढ़ाएं। अगर नहीं बढ़ा सकते हैं, तो अपने हाथ जोड़िए, अपने भाइयों को आशीर्वाद दीजिए और उन्हें उनके मार्ग पर जाने दीजिए।

गुजिया रेसपी

होली के इस खास अवसर पर नॉर्थ भारत में मावे की गुजिया बनाने का चलन है। इनको घर-घर में मेहमानों को खाने के साथ मीठे के तौर पर सर्व किया जाता है। ये भारत का एक पारंपरिक स्वीट है। इसलिए आज हम आपके लिए मावा गुजिया बनाने की रेसिपी लेकर आए है।

महत्वपूर्ण सामग्री -

-मैदा

-घी 1 टेबल स्पून

-पानी

फीलिंग बनाने के लिए-

-खोया 2/3 कप

-घी 3 टी स्पून

-तलने के लिए तेल

-सूखे अंजीर 1/2 कप - इलायची

-खजूर 1/2 कप टुकड़ों में कटा हुआ

-काजू 10 टुकड़ों में कटा हुआ

-बादाम 10 टुकड़ों में कटा हुआ

-अखरोट 10 टुकड़ों में कटा हुआ

मावा गुजिया बनाने की विधि-

इसको बनाने के लिए आप सबसे पहले मैदे में घी और पानी हल्का दूध डालें और थोड़ा सख्त आटा गूंथ लें।

इसके बाद आप इस आटे को करीब 15 मिनट तक सूती गीले कपड़े में ढक्कर

रख दें।

फिर आप एक नॉनस्टिक कढ़ाई में इलायची डालकर खोया डालें और करीब 3 मिनट तक भून लें।

इसके बाद आप इसको ठंडा होने के लिए एक तरफ रख दें और इसमें स्वादानुसार बूरा पिसी चीनी मिला दें।

फिर आप इसमें अंजीर, काजू, अखरोट, बादाम डालें और अच्छे से मिला लें।

इसके बाद आप मैदे की छोटी-छोटी लोईयां बनाकर पूरियों की तरह बेल लें।

फिर आप इसके बीच में तैयार फीलिंग भर दें और इसके किनारों पर पानी लगाकर अच्छे से बंद कर दें।

इसके बाद आप इसको गुजिया मशीन में रखकर गुजिया को शेप दें।

फिर आप एक कढ़ाई में तेल डालकर गर्म करें।

इसके बाद आप इन गुजिया को गोल्डन ब्राउन होने तक डीप फ्राई कर लें।

अब आपकी मावा गुजिया बनकर तैयार हो चुकी है।

फिर जब गुजिया पूरी तरह ठंडी हो जाए तो आप इसे एयरटाइट कंटेनर में भरकर स्टोर कर सकते हैं अगर पगी पसंद है तो इसपर चासनी डालकर पिस्ते के साथ भी सर्व कर सककीं हैं।

■■

''द कश्मीर फाइल्स'' ने लोगों के दिलों को छुआ

हाल ही में रिलीज हुई फिल्म 'द कश्मीर फाइल्स' इन दिनों देशभर में छाई हुई है। अपनी रिलीज के साथ ही यह फिल्म कई रिकॉर्ड कायम करती नजर आ रही है। सिनेमाघरों में दस्तक देने से पहले ही कई तरह के विवादों में घिरी 'द कश्मीर फाइल्स' लोगों के बीच काफी समय से चर्चा का विषय बनी हुई है। हालांकि फिल्म रिलीज होने के बाद से ही रोजाना उम्मीद से अच्छा प्रदर्शन कर रही है। इसी क्रम में फिल्म ने रविवार को भी अपने बॉक्स कलेक्शन में एक नया मुकाम हासिल किया है। रविवार को हुए फिल्म के ताबड़तोड़ बॉक्स ऑफिस कलेक्शन को देखकर कहा जा सकता है कि विवेक रंजन अग्निहोत्री की इस फिल्म को छुट्टी का भरपूर फायदा मिला है। फिल्म ने रविवार को करीब 14 करोड़ की कमाई कर ली है, जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है। रविवार को हुई कमाई के बाद 'द कश्मीर फाइल्स' कोरोनाकाल की पहली ब्लॉकबस्टर फिल्म बन गई है।14 करोड़ की लागत से बनी इस फिल्म ने जहां अपने पहले दिन यानी शुक्रवार को 3.25 करोड़ की कमाई की थी। तो वहीं शनिवार को अपनी कमाई में 100 फ़ीसदी का इज़ाफ़ा करते हुए इसने 8.25 करोड़ की कमाई कर डाली। इसके बाद रविवार को

सभी रिकॉर्ड तोड़ते हुए 'द कश्मीर फाइल्स' ने तमाम विवादों और आलोचनाओं के बावजूद 14 करोड़ रुपये अपनी झोली में समेट लिए है। फिल्म को शुरुआत में सिर्फ 650 स्क्रीन मिली थी। लेकिन इसकी बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए अब फिल्म की स्क्रीनों की गिनती बढ़ाकर 2000 कर दी है। फिल्म की कमाई और स्क्रीन की संख्या में हुई बढ़ोतरी इस फिल्म की सफलता को बताने के लिए काफी है। तेजी से आगे बढ़ते फिल्म के कलेक्शन को देख कहा जा सकता है कि 'द कश्मीर फाइल्स' दर्शकों को बेहद पसंद आ रही है।फिल्म की बात करें तो विवेक अग्निहोत्री द्वारा डायरेक्ट इस फिल्म में मिथुन चक्रवर्ती, अनुपम खेर, दर्शन कुमार, पल्लवी जोशी जैसे कई बड़े कलाकार नजर आए हैं। इस

फिल्म में कश्मीरी पंडितों पर हुए अत्याचार की कहानी को दर्शाया गया है। इसके अलावा विवेक अग्निहोत्री और सौरभ पांडे द्वारा सह- लिखित इस फिल्म में आर्टिकल 370 से लेकर कश्मीर के इतिहास पर भी बात की गई है।इसके अलावा ट्वीटर और फेसबुक पर अपील की गयी है कि गोधराकांड फाईल्स भी बननी चाहिए। इसके अलावा कपिल शर्मा की भी सोसलमीडिया पर जोरदार किरकिरी जारी है। टीम दस्तक सभी से निवेदन करती है कि सपरिवार कश्मीर फाइल्स फिल्म जरूर देखें।

नहीं थम रहा रूस और यूक्रेन युद्ध

रूस-यूक्रेन युद्ध को 18 दिन हो चुके हैं लेकिन अब तक थमने का नाम नहीं ले रहा है। इस युद्ध से दोनों देशों के हालात बद्तर हो गए हैं। युद्ध में हजारों सैनिक और नागरिक मारे गए हैं तथा 20 लाख से अधिक लोगों को देश से भागने पर मजबूर होना पड़ा है। रूस और यूक्रेन की लड़ाई यूरोपीय सुरक्षा की नींव हिल गई है।

लेकिन इसका प्रभाव दुनिया में कई देशों पर पड़ा है। देश में स्थानीय स्तर की बात करें तो 15 दिन में खाद्य पदार्थों के भावों में भारी तेजी आई है।इसका कारण होली पर्व भी है। इसका मुख्य कारण है कि आयात कम होना और व्यापारियों द्वारा स्टॉक रखना। व्यापारियों की माने तो देश में तिलहन पैदावार 20 प्रतिशत ही है। 80 प्रतिशत वेजिटेबल ऑयल का आयात विदेशों से किया जाता है। तेल के दाम बढ़ने के बाद मार्केट में साबुन सहित कई उत्पाद महंगे हो गए।क्रूड ऑयल 100 डॉलर प्रति बैरल पार कर चुका है। अगले कुछ दिन में डीजल-पेट्रोल की कीमतों में बढ़ोतरी होने की संभावना है।

बातचीत बेनतीजा -

कुल मिलाकर देखें तो युद्ध के इतने दिनों के बाद भी दोनों देशों के बीच बातचीत से कोई रास्ता निकलता नजर नहीं आ रहा है।यूक्रेन और पश्चिमी देशों की ओर से युद्ध के लिए लगातार रूस पर

आरोप लगाया जा रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का कहना है कि उसने यूक्रेन पर दो सप्ताह पहले रूसी आक्रमण शुरू होने के बाद से चिकित्सा केंद्रों पर 18 हमलों की पुष्टि की है। स्थिति ये है कि मारियुपोल में कर्मियों ने शहर के बीचों-बीच स्थित एक कब्रिस्तान में खोदी गई खाई में कम से कम 70 लोगों जिनमें कुछ सैनिक और कुछ आम नागरिक थे, बिना किसी रीति-रिवाज के दफना दिया। इनमें से कुछ युद्ध से मारे गए थे, कुछ प्राकृतिक कारणों से। दूसरी ओर यूक्रेन के राष्ट्रपति ने रूसी नेताओं से कहा है कि उनके देश द्वारा यूक्रेन पर किया गया हमला उन्हें उलटा पड़ेगा और आर्थिक पाबंदियों की वजह से उनके लोग उनसे नफरत करेंगे। वोलोदिमीर ज़ेलेंस्की ने कहा कि आप पर युद्ध अपराध में संलिप्तता के लिए निश्चित रूप से मुकदमा चलाया जाएगा। यूक्रेन के नेता ने कहा कि पश्चिम ने हमले की वजह से रूस पर कड़े आर्थिक प्रतिबंध लगाएं हैं, जिसके नतीजे रूस के सभी लोगों को महसूस होंगे। उन्होंने कहा कि रूस के नेताओं से वहां के नागरिक ही नफरत करेंगे, जिन्हें वे कई सालों से रोजाना ठग रहे हैं।

कीव ही क्यों?

यूक्रेन के पास केमिकल हथियार है और बायोलॉजिकल लैब्स चला रहा है। रूस के इस दावे को लेकर शुक्रवार को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में एक बैठक हुई जिसमें संयुक्त राष्ट्र में रूस के स्थाई प्रतिनिधि ने बताया कि, अमेरिका के प्रतिनिधि ने यूक्रेन में मिलिट्री बायोलॉजिकल गतिविधियों के बारे में गलत जानकारी दी। इसके साथ ही कहा कि, उप विदेश मंत्री विक्टोरिया नुलैंड ने इस बात की पुष्टि की है कि यूक्रेन के साइंस लैब में खतरनाक अध्ययन किए जा रहे थे। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में चर्चा करते हुए आगे कहा कि, यूक्रेन के इस गतिविधियों से पूरे यूरोपीय देशों के लोगों के लिए जैविक खतरा पैदा कर सकता है और इस केमिकल हथियारों से पूरा यूरोप चपेट में आ जाएगा।रूस द्वारा बुलाई गई इस बैठक में बताया गया कि, अमेरिकी रक्षा मंत्रालय के समर्थन से कीव की ओर से एक मिलिट्री बायोलॉजिकल प्रोग्राम चलाया जा रहा है और यह तथ्य काफी चौंकाने वाले है। रूस के स्थाई प्रतिनिधि ने कहा कि, रूसी रक्षा मंत्रालय के पास अब ऐसे दस्तावेज हैं जो पुष्टि करते हैं कि यूक्रेन में कम से कम 30 जैविक सीमाओं वाला एक नेटवर्क था जहां घातक बीमारियों के रोगजनक गुणों को मजबूत करने के लिए खतरनाक जैविक प्रयोग किए गए थे। वहीं अमेरिका के प्रतिनिधि ने कहा कि, यूक्रेन के पास कोई भी बायोलॉजिकल वेपन प्रोग्राम नहीं है और यूक्रेन में अमेरिका के समर्थन से चलने वाली कोई भी बायोलॉजिकल लैब्स नहीं हैं। अमेरिका ने रूस पर आरोप लगाते हुए कहा कि, रूस ने यूएनएससी के इस बैठक का इस्तेमाल गलत सूचना फैलाने के लिए इस्तेमाल किया है।

रूस ने रखी शर्त

रूस के राष्ट्रपति पुतिन की ओर से लगातार युद्ध रोकने को लेकर शर्त रखी जा रही है। पुतिन का साफ तौर पर यह कहना है कि यूक्रेन विसैन्यकरण करें। रूस चाहता है कि यूक्रेन उसके सामने

सरेंडर कर दें और कीव सौंप दें। पुतिन लगातार यह भी कह रहे हैं कि यूक्रेन को अपने संविधान में संशोधन करके इस प्रस्ताव को जोड़ना होगा कि वह कभी नाटो देशों का सदस्य नहीं बनेगा। रूस का ये भी कहना है कि यूक्रेन क्राइमिया पर रशिया के नियंत्रण को मान्यता दे देता है और (दोनियस्क) और (लुहांस्क) जैसे पूर्वी यूक्रेन के इलाकों को स्वतंत्र देश के रूप में स्वीकार कर ले।

भारत की भूमिका-

विश्व गुरु भारत की भूमिका भी इस युद्ध में बेहद महत्वपूर्ण है। भारत लगातार दोनों देशों से शांति और बातचीत के जरिए हल निकालने की अपील कर रहा है। इसी सप्ताह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दोनों देशों के राष्ट्रपतियों से बात की थी। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने कहा कि उन्होंने अपने देश के खिलाफ 'रूस के हमलों' का जवाब देने की जरूरत के बारे में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सूचित किया और भारत ने मॉस्को के साथ सर्वोच्च स्तर पर शांतिपूर्ण वार्ता को दिशा देने की यूक्रेन की प्रतिबद्धता को सराहा है। राष्ट्रपति जेलेंस्की ने कहा कि भारत ने युद्ध के समय उसके नागरिकों की सहायता के लिए तथा सर्वोच्च स्तर पर शांतिपूर्ण वार्ता को दिशा देने के लिए यूक्रेन की प्रतिबद्धता की सराहना की है। यूक्रेन की जनता को समर्थन के लिए आभारी हूं। रूस को रोका जाए। जबकि पुतिन पहले ही कह चुके हैं कि जो भी देश यूक्रेन की मदद करेगें वह भी भुगतेगें। अब इस अतिमहत्वाकांक्षी युद्ध का परिणाम जो भी हो पर भारत क़भी भी हिंसा का समर्थन नहीं करता और मित्र देश रूस से भी सम्मान के साथ शांति की ही अपील करता है और प्रधानमंत्री मोदी जी के सम्मान में इन दोनों देशों से सभी भारतीय सकुशल भारत लौट आये बाकि उन दोनों देशों की जनता की बात तो हम उम्मीद करते हैं कि कोई तीसरा विश्व युद्ध नहीं होगा जल्दी ही शांति स्थापित होगी।

■ ■

रूस यूक्रेन संकट और गेहूं निर्यात; क्या भारत के लिए 'आपदा में अवसर'?

राकेश प्रताप सिंह

रूस पर अमेरिका और यूरोपीय देशों की तरफ़ से लगाए गए प्रतिबंधों की वजह से , तेल और प्राकृतिक गैस की कीमतें आसमान छू रही हैं

भारत भी अपने तेल और गैस का बिल कम करने के लिए अलग-अलग प्रयासों में जुटा है, लेकिन आपदा की इस घड़ी में प्रधानमंत्री मोदी ने गेहूं के निर्यातको से खास़ अपील की है

आइये समझते है पूरी बात.... लेकिन इसके लिए हमे दुनिया और भारत के गेहूं के बाज़ार के बारे में समझना ज़रूरी है

विश्व में गेहूं का निर्यात करने वाले टॉप 5 देश रूस, अमेरिका, कनाडा, फ्रांस और यूक्रेन हैं, ये पाँचों देश मिल कर 65 फ़ीसदी बाज़ार पर क़ब्ज़ा जमाए बैठे हैं, इसमें से तीस फ़ीसदी एक्सपोर्ट रूस और यूक्रेन मिल के करते है, रूस का आधा गेहूं मिस्र, तुर्की और बांग्लादेश खरी़द लेते हैं, जबकि यूक्रेन के गेहूं के खरी़दार हैं मिस्र, इंडोनेशिया, फिलीपींस, तुर्की और ट्यूनीशिया.

अब दुनिया के दो बड़े गेहूं निर्यातक देश, आपस में जंग में उलझे हों, तो उनके ग्राहक देशों में गेहूं की सप्लाई बाधित होना लाज़मी हैङ

इस वजह से अंतरराष्ट्रीय बाज़ार

में गेहूं की डिमांड बढ़ रही है और सप्लाई के दूसरे सोर्स तलाशे जा रहे हैं, मध्य पूर्व और उत्तर अफ्रीका के देशों में गेहूं संकट की शुरुआत हो चुकी है, कुछ मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक़ मिस्र जैसे देश में कुछ महीने का गेहूं का स्टॉक बचा है. मिस्र अपने गेहूं की खपत का 80 फ़ीसदी हिस्सा रूस और यूक्रेन से आयात करता है. इस वजह से वहाँ दिक्क़त ज़्यादा है, रॉयटर्स की रिपोर्ट के मुताबिक़ आने वाले दिनों में गेहूं का आयात करने वाले देशों को 40 फ़ीसदी ज़्यादा खर्च़ करना पड़ सकता है क्युकि गेहूं के दाम तेज़ी से बढ़ने लगे हैं.

अब समझते है कि क्यू पीएम मोदी भारत के गेहूं निर्यातकों से 'आपदा में अवसर' की तलाश करने को कह रहे हैं ?

दुनिया में गेहूं के पैदावार में चीन पहले पायदान पर है, भारत दूसरे पर, लेकिन निर्यात में दुनिया के टॉप 10 देशों मे भी शुमार नहीं है. एक रिपोर्ट के मुताबिक 'भारत में सालान 400- 450 लाख टन गेहूं की पैदावार होती है. कुल पैदावार का 100-150 लाख टन खुले बाज़ार में बिक जाता है और कुछ निजी इस्तेमाल में लग जाता है. बाक़ी तक़रीबन 300 लाख टन गेहूं एफ़सीआई खरीद लेती है. एफ़सीआई इसमें से 220-230 टन का इस्तेमाल अलग-अलग स्कीम के तहत करती है. बाक़ी 70-80 लाख टन का गेहूं बच जाता है. ये बचा हुआ गेहूं मानवीय सहायता के तौर पर कभी-कभी दूसरे देशों मे भेजा जाता हैं.'

ङइन आंकड़ों से ये समझना मुश्किल नहीं की भारत में निर्यात के लिए गेहूं पर्याप्त मात्रा में है, तो फिर निर्यात में भारत पीछे क्यों है ?ङ

इसके दो अहम कारण है - देश में ही अधिक मात्रा में गेहूं की खपत होना और दूसरा है गेहूं का न्यूनतम समर्थन मूल्य अंतरराष्ट्रीय बाज़ार से अधिक होना. यूक्रेन रूस संकट से पहले तक अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में गेहूं का रेट कम और भारत में ज़्यादा रहता था. इसलिए आयात करने वाले देश भारत का रुख नहीं करते थे.'

भारत मे गेहूं की दो तरह की क्वालिटी होती है. एक वो जो पंजाब हरियाणा की तरफ़ होती है. उसे साफ़्ट गेहूं कहते हैं. दूसरा वो है जो मध्यप्रदेश में होता है, जिसे शरबती गेहूं कहते हैं. मध्यप्रदेश में होने वाले गेहूं का इस्तेमाल ब्रेड और बेकरी की चीज़ें बनाने में ज़्यादा होता है. इस वजह से कई लोग इसे बेहतर मानते हैं.'

तो यूक्रेन-रूस युद्ध में क्या भारत दुनिया को गेहूं संकट से उबरने में निर्यातक बन कोई भूमिका निभा सकता हैं ? तो जवाब हा हैं.... साल 2014 में रूस ने जब क्राइमिया पर हमला किया था, तब यूरोपीय संघ के देशों ने रूस को डेयरी उत्पाद देना बंद कर दिया. उस समय अमूल ने रूस में नया बाज़ार तलाशा और उनका साल का टर्नओवर काफ़ी बढ़ गया था. उस लिहाज़ से देखें तो इस समय भारत के गेहूं के एक्सपोर्टर दूसरे देशों में गेहूं बेचने का विकल्प तलाश कर सकते हैं.'

तो हमारे मन मे अगला प्रश्न होगा की क्या गेहूं के एक्सपोर्ट से भारत में गेहूं के दाम बढ़ नहीं जाएंगे ?

इसे हमे समझना होगा - गेहूं एक्सपोर्ट के कुछ फ़ायदे भी हैं और कुछ नुक़सान भी, फ़ायदा ये कि भारत के गेहूं को अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में एक अलग पहचान मिलेगी. भारत के निर्यात बिल से होने वाली कमाई में इज़ाफ़ा होगा. भारत सरकार राशन में जिन्हें गेहूं देती है, उनपर इसका कोई असर नहीं होगा. लेकिन नुक़सान ये हो सकता है कि वो मिडिल क्लास जो पैकेट का आटा खरीदते हैं उनको आने वाले दिनों में बढ़ी हुई कीमत चुकानी पड़े. इससे कंज्यूमर प्राइज़ इंडेक्स बढ़ सकता है.'

इस समय अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में गेहूं 40 हज़ार रुपये प्रति टन है. भारत के एफ़सीआई के गोदाम में रखे गेहूं तक़रीबन 25 हज़ार रुपये प्रति टन में खरीदे गए हैं (एमएसपी और माल ढुलाई जोड़ दें तब), यानी गेहूं के दाम भारत में आज की तारीख में कम है, भारत उन देशों को अपना ग्राहक बनाने की कोशिश में लग सकता है, जो पहले रूस और यूक्रेन के ग्राहक थे, इसे देखते हुए भारत से इस साल रिकॉर्ड 70 लाख टन गेहूं का निर्यात होने की उम्मीद है. एक शीर्ष सरकारी अधिकारी के अनुसार वैश्विक बाज़ार में कीमतों में बढ़ोतरी दुनिया में गेहूं के दूसरे सबसे बड़े उत्पादक देश को बाजार में हिस्सेदारी बढ़ाने का मौका देती है.

लेकिन देखना ये है भारत इस मोके का उपयोग किस तरह करता है.

■ ■

सच की दस्तक के संरक्षक का हुआ सम्मान

प्रसिद्ध साहित्यकार, रचनाकार, कलाकार, कवि, पत्रकार एवं समाजसेवी को प्रत्येक वर्ष सम्मानित करती है। ऐसे में इस वर्ष बसंत श्री सम्मान से सम्मानित इंदु भूषण कोचगाव ने कार्यक्रम के दौरान संस्था द्वारा किए जा रहे सामाजिक गतिविधियों की सराहना की ।

देहरादून में करनपुर स्थित क्लब कार्यालय में सामाजिक संस्था प्रगतिशील क्लब ने अपना वार्षिकोत्सव समारोह मनाया, जिसमें संस्था प्रत्येक वर्ष के भांति इस बार 28वां बसंत श्री सम्मान समारोह का भी आयोजन किया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार ज्ञानेंद्र कुमार जी ने सॉल ओढ़ा कर सच की दस्तक के संरक्षक श्री इंदु भूषण कोचगवे जी का सम्मान किया। वही संस्था के महासचिव पीयूष भटनागर ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। और संस्था के गतिविधियों से सभी को अवगत कराया। वही इस मौके पर डॉ. लक्ष्मीकांत त्रिपाठी, वाणीकांत पंकज, शिव मोहन सिंह, गोपालदत्त चौकियाल, रोहित कोचगवे, रोशन गैरोला, अधिवक्ता नरेंद्र सिंह नेगी, स्वप्लिल सिन्हा सहित अन्य लोग मौजूद रहें।वहीं इस कार्यक्रम में बतौर विशिष्ट अतिथि अवकाश प्राप्त जनरल (भारतीय सेना) अश्वनी कुमार बक्शी ने अपने संबोधन में संस्था के कहा की सम्मान के सम्मान समारोह में जिस प्रकार से समाज से जुड़े हुए ऐसे लोगों का चयन किया जाता है जो अपने क्षेत्र में अपने उत्कृष्ट कार्यो को लेकर औरों के लिए प्रेरणा स्रोत बनते हैं।इस दौरान कार्यक्रम की शुरुवात द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर की गाई वही कार्यक्रम में संस्था के साहित्यिक सचिव जगदीश बावला ने मंच संचालान किया। इस बार 28वां बसंत श्री सम्मान 83 वर्षीय सेवानिर्वित रेलवे विद्यालय के प्राचार्य इंदु भूषण कोचगावे को दिया गया।साथ ही प्रगतिशील क्लब के अध्यक्ष ए. के. सक्सेना ने अपने संबोधन में बताया की संस्था विगत 47 वर्षों से कई विषयों पर सामाजिक कार्य कर रही है, वही उन्होंने कहा कि संस्था समाज के किसी एक प्रसिद्ध साहित्यकार, रचनाकार, कलाकार, कवि, पत्रकार एवं समाजसेवी को प्रत्येक वर्ष सम्मानित करती है। ऐसे में इस वर्ष बसंत श्री सम्मान से सम्मानित इंदु भूषण कोचगाव ने कार्यक्रम के दौरान संस्था द्वारा किए जा रहे सामाजिक गतिविधियों की सराहना की।

■■

कुँवर सर, संस्मरण व एक अध्ययन

ग्यारह अध्याय में विभाजित पुस्तक 'कुँवर सर, संस्मरण व एक अध्ययन' में हमे अपनी सभ्यता और संस्कृति से रूबरू होने का अवसर प्राप्त हो रहा है।

नैरेटर प्रभाकर की सहज भाषा पुस्तक को आकर्षित बना रही है।

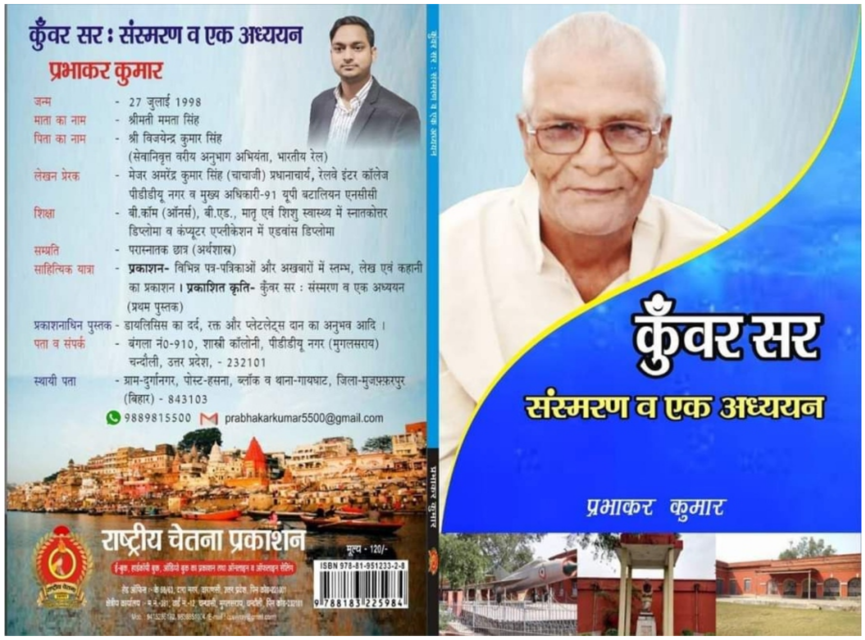

डॉ0 कृष्णा सिंह

विपरीत समय में ही पुरुषोत्तम होने की असली परीक्षा होती है। एक अच्छा नेतृत्व न सिर्फ़ आगे चलता है, बल्कि आगे चलने वालों को तैयार भी करता है। ऐसे ही व्यक्तित्व के धनी पूर्व मध्य रेलवे इंटर कॉलेज, मुग़लसराय के पूर्व उपप्राचार्य स्मृतिशेष विश्वनाथ कुँवर सर थे। मेरे प्रिय शिष्यों में शुमार प्रभाकर कुमार द्वारा लिखी गयी पुस्तक 'कुँवर सर, संस्मरण व एक अध्ययन' में कुँवर सर के उक्त व्यक्तित्व को बहुत ही ईमानदारी से झलकाया गया है। देश की आजादी के बाद निहायत ही गरीब परिवार से ताल्लुक रखने वाले एक शिक्षक ने किस प्रकार अपना जीवन ईमानदारी और अपने उसूलों के आधार पर व्यतीत किया , उसका व्यवस्थित रूप इस पुस्तक में है।

शुरुआत के चैप्टर में ही पुस्तक का नायक 24 के आभाव में मैट्रिक के फॉर्म भरने के लिए दर-दर की ठोकर खा रहा होता है। परंतु शाहरुख खान की फ़िल्म 'ओम शांति ओम' का ये फेमस डायलॉग...

'कहते है अगर किसी चीज को दिल से चाहो तो पूरी कायनात उसे तुमसे मिलाने की कोशिश में लग जाती है।' पुस्तक के नायक के जीवन में यह डायलॉग सिद्द होती दिख रही है। एक सरकारी आदेश आता हैं कि 5 ऐसे बच्चे जिनका कक्षा में अच्छे अंक आते हैं, उनका पंजीकरण शुल्क नहीं लगेगा। उन पांच बच्चों में पुस्तक के नायक के नाम पर भी सहमति बन जाती हैं और यहाँ से नायक के जीवन का यूटर्न हो जाता है और अपने परिश्रम एवं ईमानदारी के बल पर 2001 में एक प्रतिष्ठित रेलवे कॉलेज से उपप्राचार्य के रूप में नायक सेवानिवृत्त होते है।

रामचरित मानस में एक चौपाई उस समय को बताती है, जब भगवान राम सागर पार करने के लिए सागर से रास्ता मांगने के लिए ध्यान करने जा रहे थे। लक्ष्मणजी ने तब भगवान रामजी को उनकी शक्ति और क्षमता को याद दिलाते

हुए कहा था कि आप स्वयं इतने शक्तिशाली हैं कि एक बाण में समुद्र को सुखा सकते हैं, फिर सागर से अनुनय-विनय क्यों? भगवान राम यह सब जानते थे लेकिन फिर भी इन्होंने शक्ति से पहले शांति से परिस्थितियों को हल करने का प्रयास किया और बताया कि शक्तिशाली को संयमी होना भी जरूरी है। आप अपने भरोसे पर काम कीजिए ईश्वर स्वयं आपकी सहायता करेंगे। कुँवर सर पुस्तक के तीसरे अध्याय में भी नायक ने कंपनी के मैनेजर के ख़राब व्यवहार पर बहुत ही शांति एवं संयम से अपनी भूमिका का निर्वहन करते दिख रहे हैं।

एक तरफ जहाँ नायक का स्काउटिंग एवं अपने कर्तव्य के प्रति झुकाव और योगदान, साथ ही अपने सिद्धांतों के लिए डी0आर0एम0 जैसे वरीय अधिकारी के भी फैसले को ठुकराने जैसे निर्णय पाठक के मन मे जिज्ञासा उत्पन्न कर दे रही है। वही दूसरी ओर छात्र के साथ हुई दुर्घटना के बाद पुत्र की भांति छात्र के लिए अपना कण-कण समर्पित कर देना, नायक के कोमल हृदय और व्यक्तित्व को बहुत ही स्पष्टता से नैरेटर प्रस्तुत करते दिख रहे है।

पुस्तक के प्रत्येक अध्याय को रोचक बनाते हुए नैरेटर ने बहुत ही सजीव चित्रण किया है। ग्यारह अध्याय में विभाजित पुस्तक 'कुँवर सर, संस्मरण व एक अध्ययन' में हमे अपनी सभ्यता और संस्कृति से रूबरू होने का अवसर प्राप्त हो रहा है।

नैरेटर प्रभाकर की सहज भाषा पुस्तक को आकर्षित बना रही है।

कुँवर सर, संस्मरण व एक अध्ययन
राष्ट्रीय चेतना प्रकाशन, मुग़लसराय
मूल्यः- 120/-

■■

सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

पाठकों से निवेदन.

प्रिय पाठक बन्धु,

सच की दस्तक मासिक पत्रिका आप की अपनी पत्रिका है। हिन्दी साहित्य और भाषा के विकास के लिए आपका सहयोग अपेक्षित है। पत्रिका निरन्तर आप के घर पहुँचती रहे इसलिए निम्न फार्म भरकर शीघ्र भेजने की कृपा करें या हमारे प्रतिनिधि से सम्पर्क करें।

श्री/श्रीमती /कुमारी...
पता...
....
.पिन कोड................ मोबाइल संख्या............................
ईमेल...

वार्षिक सदस्यता - 300/- रुपए मात्र।
पंचवर्षीय सदस्यता - 1200/- रुपए मात्र।

पाठक अपनी सदस्यता राशि निम्न खाते में जमा कर सकते हैं और जमा करने के बाद मोबाइल पर अवश्य सूचित कर देंगे।

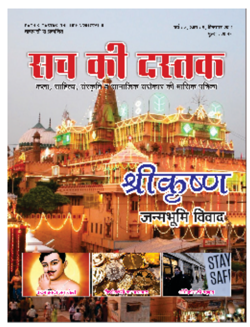

Sach Ki Dastak
ब्रजेश कुमार
A/c. No. : 13751652000024
सम्पादक, सच की दस्तक
IFSC Code : PUNB0137510
Panjab National Bank
पता : 1215/A सुभाष नगर, दीनदयाल उपाध्याय नगर, चन्दौली
पिन कोड - 232101, मोबाइल नम्बर - 9621503924

इंतज़ार

जानती हूं तुम नहीं निभा पाओगे,
मेरा साथ जिंदगी भर...
मेरी तरह तुम आजाद नहीं हो,
अपने पंखों को फैलाने में...
मेरी तो आदत है हर पल
हर लम्हा जीने की..
मेरी इन आदतों से तुम कभी
परेशान ना हो जाना...
आती-जाती लहरों की तरह यूं ही,
तुम भी आते रहना मेरी जिंदगी में...
कभी दूर और कभी पास,
यूं ही होते रहना मुझसे...
मैं फिर भी चट्टानों की तरह
खामोश ऐसे ही मिलूंगी..
हाथ में चाय का प्याला लिए,
ऐसे ही इंतजार करती हुई...

जिंदगी के दूसरे पहर में भी,
उसी हाशिये पर मुख्तसर...

उसी तरह बेखौफ, वाबस्ता
अपने ख्यालों में खोई हुई...

■■

गौसिया निशात
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

सच की दस्तक के 5 वर्ष पूर्ण होने की हार्दिक शुभकामना

डॉ दीपिका अग्रवाल

महिला रोग विशेषज्ञ

अग्रवाल सेवा संस्थान के ठीक सामने, तड़वा बाबा मंदिर के पास

जीटी रोड बेचूपुर, सुभाष नगर नई बस्ती, पंडित दीनदयाल उपाध्याय नगर

जनपद चंदौली

सच की दस्तक के 5 वर्ष पूर्ण होने की हार्दिक शुभकामना

रोहितेश पाल

पॉपुलर मेडिकल स्टोर

पूर्वी बाजार जी टी रोड

पंडित दीनदयाल उपाध्याय नगर

सच की दस्तक के 5 वर्ष पूर्ण होने की हार्दिक शुभकामना

Rajeev Jaiswal

SAI HANSRAJ BATTARIES

Auth. Distributor : Exide, Microtek, Luminous,
Amron, Livguard, Solar Panel, Stablizer, Sales & Service

Lot No-1, House No. 149, Gallamandi Chauraha,
Mughalsaai, Chandauli (U.P.) 232101
Mobile : 9839075567, 7007673731

सच की दस्तक के 5 वर्ष पूर्ण होने की हार्दिक शुभकामना

डॉ. सुल्तान खान

बनारस रत्न से सम्मानित

पीसीसी मेंबर, कांग्रेस पार्टी, पड़ाव बहादुरपुर

गांव सभा, मुगलसराय चन्दौली

RNI: UPHIN/2017/75716

SACH KI DASTAK

MARCH, 2022
PRICE : RS. 20/-

(A MONTHLY HINDI JOURNAL)
C-6/2-M, NEAR CHETGANJ THANA,CHETGANJ, VARANASI
Website : www.sachkidastak.com, E-mail : sachkidastak@gmail.com
Mob. : 8299678756, 9598056904

EDITOR : BRAJESH KUMAR
NEWS EDITOR : AKANSHA SAXENA